सत्पुरुष अने सुज्ञानी साधुना सद्गुणो.

हस्तमां तत्परता, मुखमां मधुरता, दानमां उत्साह, मित्रो निष्कपटता, गुरुओमां विनयपणुं, आचारमां पवित्रता, शुभमां रसिकता, चित्तमां गांभिर्यता, शास्त्रमां ज्ञातापणुं, रूपमां सौंदर्यता, अने प्रभु भजनमां तल्लीनता ए सर्व सद्गुणो सत्पुरुषमां हाजरी आप्या करे छे.

जेमने सर्व एक सरखा छे, जीव मात्र उपर समान दृष्टि छे, दयावान छे अने कामक्रोधादि कषाय तथा विषयोथी विरक्त छे तेओ महापुरुष कहेवाय छे. जेओ मनने काबुमां राखी सर्वथी समभावे वर्ते तेम स्थिर बुद्धिवाळा मुनि गणाय छे. जेओ कोई काळे पण म[illegible] वाणी के कर्मथी कोई प्राणि मध्ये अहित चिंतवता नथी तेओ सुज्ञानी साधु तरीके गणाय छे.

सद्गुण संग्रह.

श्रीमन्नागपुरीयबृहत्तपगच्छाधिराज श्रीपार्श्वचंद्र सूरीश्वर सद्गुरुभ्यो नमो नमः ॥

श्री
श्री पा श्री
श्री पा र्श्व पा श्री
श्री पा र्श्व चं र्श्व पा श्री
श्री पा र्श्व चं द्र चं र्श्व पा श्री
श्री पा र्श्व चं द्र सू द्र चं र्श्व पा श्री
श्री पा र्श्व चं द्र सू री सू द्र चं र्श्व पा श्री
श्री पा र्श्व चं द्र सू री श्व री सू द्र चं र्श्व पा श्री
श्री पा र्श्व चं द्र सू री श्व र श्व री सू द्र चं र्श्व पा श्री
श्री पा र्श्व चं द्र सू री श्व र स र श्व री सू द्र चं र्श्व पा श्री



द्गु
रु
भ्यो
न
मो
न
मः



सत्पुरुष अने सुज्ञानी साधुओना सद्गुणो.

स्वधर्ममां तत्परता, मुखमां माधुर्यता, दानमां उत्साह, मित्रमां निष्कपटता, गुरुओमां विनयपणुं, आचारमां पवित्रता, गुणमां रसिकता, चित्तमां गांभिर्यता, शास्त्रमां ज्ञातापणुं, रूपमां सौंदर्यता अने प्रभुभजनमां तल्लीनता ए सर्व सद्गुणो सत्पुरुषमांज हाजरी आप्या करे छे !

जेओने सत्य एज व्रत छे, जीव मात्र ऊपर समान दृष्टि छे, दयामय छे अने काम क्रोधादि कषायथी विरक्त छे, तेओज साधु कहेवाय छे ! मुंगा रहेवाथी, भस्म लगाववाथी, कायाकष्ट करवाथी, जंगलमां रहेवाथी के जटा नख वधारवाथी मुनि गणातो नथी; पण मनने काबुमां राखी सर्वथी समभावे वर्ते तेज स्थिर बुद्धिवाळो मुनि मनाय छे. जेओ कोइ काळे पण मन, वाणि के कर्म वडे कोइ प्राणि प्रत्ये पापबुद्धि चिंतवता नथी तेओज सुज्ञानी साधु पुरुष गणाय छे !

(सद्गुण संग्रह.)

जीवनचरित्रो वांचवानी जरूरियात.

जीवनचरित्रो वांची मनन करवाथी-सारासार, कृत्या-
कृत्य, भक्ष्याभक्ष्य अने पेयापेय आदिना यथार्थनुं
पडे छे. आचारनी, मनना व्यापारनी अने आचारनी शुद्धि थ
समागम थाय छे. अनीति-अनाचार-अनिष्ट रीत रिवाजोने
थतां दुराचारोनो मार्ग बंध पडे छे. देव गुरु धर्म ए त्रणे त
रहस्य समजवामां आवतां आत्मोन्नतिकरणमां विचारी उपाय जन्य
पड करवानां साधनो रजु थाय छे. विविध दृष्टान्तोनी पुरी
वाळी मळता मात्र थतां एक सारा अनुभवीनी शरम राखनार नी
वरी उद्यमननी ओळख पड पडे छे. संसारनी असारता, स्वार्थनी
मया. आधि, व्याधि, उपाधिनी वेटरी पडतो दुर्गतिओनो विचार
निहाळवानो समय दृष्टिगोचर थाय छे. दानवता दूर्गीकना दर्शन
थतां मननी अंदर महत्वोट अमर थाय छे. जीवन सार्थकताना नि-
यमो केवळ सत्कर्म करे मात्र थतां स्वर्गापवर्गादिनां सुखो स्वयमेव
मळे छे. माटेज

जीवनचरित्रो जरूर वांचो जन्म सफळ थवा जनो !
एवी अवस्थान अटकशे दुष्कर्मरूपी दुश्मनो !
आ जन्म ने परजन्ममां मळशे सदा शांति नक्की !
इतिवत्तु मननेह सह मागीने अंते ए पणी !

कोनुं जीवन सफळ छे ?

जन्म धरो आ जगतमां, मर्यां [illegible];
  [illegible], पण सफळ अवतार ! १
[illegible], करी [illegible];
  [illegible] करो, पण सफळ अवतार ! २
दुःखी [illegible], दया धरी दिल [illegible];
  दुःख करी दूर [illegible], पण सफळ अवतार ! ३
[illegible], देश [illegible];
  [illegible], पण सफळ अवतार ! ४
[illegible], भक्ति [illegible];
  [illegible], पण सफळ अवतार ! ५
[illegible], [illegible];
  [illegible], पण सफळ अवतार ! ६
[illegible], [illegible];
  [illegible], पण सफळ अवतार ! ७
[illegible], [illegible];
  [illegible], पण सफळ अवतार ! ८
[illegible], [illegible];
  [illegible], पण सफळ अवतार ! ९

भूमिने भाररूप कोण छे ?

जेओ विनय विवेक विना विमल आचार अने विनीत वाणिथी वाकेफ थइ विशुद्ध वैभव युक्त जीवन गुजारी वार वार धर्मी बनता नथी. जेओ सदाचार, सुनीति, सद्विद्या, सद्धर्म अने सत् आचरणी विमुख रही पापाचारमां प्रवर्तन करे छे. जेओ भारे पापस्थानकना आगेवान बनी नरकद्वारमां जवानी निसरणी रूप थइ रह्या छे. जेओ नास्तिकताने स्वाधीन थइ सत्य वस्तुने असत्य मानी धर्मस्थानीय सिद्धांत वाक्योने पापरूप माने छे. जेओनुं मस्तक शुद्ध देव, शुद्ध गुरु, सत्पुरुषोना चरणोमां नमतुं नथी, जीवन तीर्थ, भगवंत अने साधुनिग्रामनां दर्शन करवा चाहता नथी, हाथ सुपात्रमां दानदेवा तत्पर रहेता नथी, चरण पवित्र तीर्थस्थळो तरफ गमन करता नथी, मन विनय भावना युक्त परमात्मानी भक्तिमां लीन थतुं नथी, अने वाणी आगमोनां फरमानो उचरवाने उजमाळ बनती नथी. जेओ तप-जप-दया-ध्यान-ज्ञान -अने अन्य क्रिया कांडमां अडग रही एक रस थता नथी. जेओ धनवान छतां धननो सदुपयोग करवामां, विद्वान छतांविद्यानो प्रचार करी अविद्यानो अंत करवामां, अधिकार छतां अन्यायी अने अनाचारिओने योग्य शासन आपवामां अने गौरवना पूर्ण गुरुपदना योग्य छतां शिष्योने सन्मार्ग स्थापीन करवामां पद-स्कार रहे छे. जेओ दृष्टिगत छतां परोपकार दृष्टिमां पछात रही अर्थीनी आशा पूर्ण करता नथी तेओ भूमिने भाररूप छे !

कंठमणिरूप कथनो.

प्राणि मात्रना प्राणोने पोताना प्राण समान प्रिय गण, सदा सत्य बोल, वगर आपेलुं कंइ पण ग्रहण न कर, परस्त्रीनो सर्वथा त्यागकर, पारकुं धन पत्थर समान गणी तेनी ममता छोड, धर्माचरण कर, अधर्मने तिलांजली दे, विद्याभ्यासमां तेमज धर्म करणीमां किंचित् पण प्रमाद न कर, विद्यागुरुनी तथा सद्गुरुनी सेवामां तत्पर रह्या कर, आरोग्यता जाळववामां उद्युक्त रहे, उत्तम वैभव प्राप्त करवामां उत्तम विचार बळनो उपयोग कर. अनिंदित कर्म करवामां निरालस्य था, दुष्टकर्मोने दमन करवामां वीरमणि नीवड, सद्गुण ग्रहण करवामां चानकदार ग्राहक था, अनाचार अवगुणने अनादर आपवामां बिलकुल बेदरकारपन, साचानो संगी था, सत् संगनो उमंग साथ रंग लगाड, पापथी विरक्त रही पुण्य-मां रक्त रह्या कर, गुरुनी वाणी श्रवण करी तेनो सार ग्रहवामां विवेकी नीवड, देवदर्शन, तीर्थाटन, जप, तप, ध्यान प्रभुभक्ति वगेरे मां उत्कट इच्छावंत था, दीन हीन मुस्कीन तरफ दयानी लागणी भरी दिलसोजी बतावी तेमनी सार संभाळ ले, मळेला धननो सदुपयोग करी सुकीर्तिनो भागी था, परोपकारमां प्राणसंकट प्राप्त थतां लगी पण पाछो न पड, दुर्गतिनां बारां बंध करी सद्गतिनी सीडीए सावधानी साथ चढवा मांड, दुर्गुण, दुर्व्यसनो अने दुष्कृत्यमां तद्दन अणगमो धराव, स्वधर्ममां मुद्दता पूर्वक स्थिर रही उभय भवने प्रशंसा पात्र थवानी योजना योज अने सदैव सुपात्रमां दान दइ जन्मनो ल्हाव ल्हर आनंदमां गर्क था जेथी आनंद आनंद थाय अने भवनी भावठ जाय !

उपोद्घात.

सुकृत्या वांच्ये सर्वदा, सन्मति थाय सहाय;
दुर्मति दुर्गति दूर थइ, आनंद मंगल थाय.

प्रिय पुनीत पाठक वर्ग ! पूर्ण प्रभावशाली महात्माओनां जीवन वृत्तान्तो अत्यंत लाभदायी होवाथी आ उत्तमोत्तम बोधदाता श्रीमान् नागपुरीय बृहत्तपगच्छाधिराज मंगल मूर्तिरूप पार्श्वचंद्रसूरीजीना संक्षिप्त जीवनचरित्रने गुर्जरी भाषामां गद्यपद्यमय तैयार करी प्रगट करवा मारूं मन ललचायुं. कारण के—सो टचना सोनाने, सुगंधीदार पदार्थोने, कीमती कोहीनूरने अने उमदा पदार्थने, ग्रहण करवा कोनुं मन नही ललचाय !

ललचावानो हेतु एज हतो के—बीजी नकामी कुथलीओ, विकथाओ, नाटक चेटक अने शृंगारी लेखोमां अमूल्य वखतनो भोग आपी महामूल्य जीवनने गुमाववा करतां आवां अत्युपयोगी मार्गभूत चरित्रो वांची विचारी मनन करवामां समय व्यतीत थाय तो ते लेखे थयो गणाय छे.

जे पुस्तक वांचवा वखते अनीतिने अनादर, सुनीतिने आदर, सद्ज्ञानने सन्मान अने भाइ बहेन पासे बेसी वांच्या छतां मनमां कशो पण संकोच क्षोभ न थाय तेज पुस्तक उत्तम लाभदाता मनाय छे. पण आ वृत्तान्त आत्मकल्याणमां प्रवृत्ति जगावे छे. जेथी प्रत्येक आत्मकल्याणेच्छु भाविकजनोए अत्यंत मानपूर्वक आद्योपांत लगी वांची विचारी तेनुं मनन करवानी अत्यावश्यकता छे !

कंठमणिरूप कथनो.

प्राणि मात्रना प्राणोने पोताना प्राण समान प्रिय गण, सदा सत्य बोल, वगर आपेलुं कंइ पण ग्रहण न कर, परस्त्रीनो सर्वथा त्यागकर, पारकुं धन पत्थर समान गणी तेनी ममता छोड, धर्माचरण कर, अधर्मने तिलांजली दे, विद्याभ्यासमां तेमज धर्म करणीमां किंचित् पण प्रमाद न कर, विद्यागुरुनी तथा सद्गुरुनी सेवामां तत्पर रह्या कर, आरोग्यता जाळववामां उद्युक्त रहे, उत्तम वैभव प्राप्त करवामां उत्तम विचार बळनो उपयोग कर. अनिंदित कर्म करवामां निरालस्य था, दुष्टकर्मोने दमन करवामांवीरमणि नीवड, सद्गुण ग्रहण करवामां चानकदार ग्राहक था, अनाचार अवगुणने अनादर आपवामां बिलकुल बेदरकारचन, साचानो संगी था, सत् संगनो उमंग साथ रंग लगाड, पापथी विरक्त रही पुण्यमां रक्त रया कर, गुरुनी वाणी श्रवण करी तेनो सार ग्रहवामां विवेकी नीवड, देवदर्शन, तीर्थाटन, जप, तप, ध्यान प्रभुभक्ति वगेरे मां उत्कट इच्छावंत था, दीन हीन मुस्कीन तरफ दयानी लागणी भरी दिलसोजी बतावी तेमनी सार संभाळ ले, मळेला धननो सदुपयोग करी सुकीर्त्तिनो भागी था, परोपकारमां प्राणसंकट प्राप्त थतां लगी पण पाछो न पड, दुर्गतिनां बारां बंध करी सद्गतिनी सीढीए मात्रधानी साथ चडवा मांड, दुर्गुण, दुर्व्यसनो अने दुष्कृत्यमां तरन अगगमो बताव, स्वधर्ममां सुदृढता पूर्वक स्थिर रही उभय भवने सफळ थाय थवानी योजना योज अने सदैव सुराज्यमां दान दइ जन्मनो ल्हाव कइ आनंदमां गर्क था जेथी प्रानंद आनंद थाय अने भवनी भावट जाय !

आ चरित्रमां चरित्रनायकना वृत्तान्त अंदर जोइतो परिश्रम लेवा जतां पण क्रमवार वर्षोनो अहेवाल यथास्थित हाथ लागी शक्यो नथी; केमके बीकानेरना स्वगच्छी उपाश्रयना भंडारमांनां पुस्तको रक्षकना अभावथी वर्षाकाळमां पावसना प्रतापवडे कागळना पींडरूप बनी गयां, जेना लीधे योग्य आधार हाजरी आपी शक्यो नहीं; तथापि बनता प्रयासे अन्य ग्रंथोमांथी तत्त्वग्रहण करवानी सुविचारणा भर्यो विषय हाथथी जवा दीधो नथी. तेमज पूज्यपाद आचार्यवर्य्य श्री भ्रातृचन्द्र सूरीश्वरजीना साक्षर शिष्य मुनि महाराज श्रीसागरचन्द्रजी साहेबे केटलीक हकीकतमां उपकार करेल छे तेथी तेमनो अंतःकरण पूर्वक आभार मानुंछुं. तेमज अन्य जनोये सहायता आपी छे तेओनो पण उपकार मानुछुं.

जो के में ग्रंथ पूर्ण कर्यो छे; तदपि तालावेलीनी तृप्ति पूर्ण थवा पामी नथी, एज महान् प्रभाविके चमत्कार प्रदर्शित करेली करणी तथा करेलां चोमासां अने रचेला ग्रंथो जेम बने तेम शोध खोळ द्वारा हाथ करवा यत्न प्रयत्न चालुज रहेल छे. आशा छे के प्रत्येक विमलमतिवंत वाचको गुणविचारणानुं वातावरण सबळ करी अमारा मनोरथने पुष्टि आपी धारेलाने सफलता अपावशेज अने जनसमुदायनुं विशेष श्रेय चाहीं एज इच्छीयेके:—

सर्व जीवनुं शुभ थजो, जजो क्लेश कंकास;
संघ संघ मंगलो सदा, भजजो पुण्यप्रयास.

मौन एकादशी | सर्व जीवहित चिंतक
सं. १९७१ | शाह मंगळदास लल्लुभाइ.

आ चरित्रमां चरित्रनायकना वृत्तान्त अंदर जोइतो परिश्रम लेवा जतां पण क्रमवार वर्षोनो अहेवाल यथास्थित हाथ लागी शक्यो नथी; केमके बीकानेरना खरतरगच्छी उपाश्रयना भंडार-मांनां पुस्तको रक्षकना अभावथी वर्षाकाळमां पावसना प्रतापवडे कागळना पींडरूप बनी गयां, जेना लीधे योग्य आधार हाजरी आपी शक्यो नहीं; तथापि बनता प्रयासे अन्य ग्रंथोमांथी तत्त्वग्रहण करवानी सुविचारणा भर्यो विषय हाथथी जवा दीधो नथी. तेमज पूज्यपाद आचार्यवर्य्य श्री भ्रातृचन्द्र सूरीश्वरजीना साक्षर शिष्य मुनि महाराज श्रीसागरचन्द्रजी साहेबे केटलीक हकीकतमां उपकार करेल छे तेथी तेमनो अंतःकरण पूर्वक आभार मानुंछुं. तेमज अन्य जनोये सहायता आपी छे तेओनो पण उपकार मानुंछुं.

जो के में ग्रंथ पूर्ण कर्यो छे; तदपि तालावेलीनी तृप्ति पूर्ण थवा पामी नथी, एज महान् प्रभाविके चमत्कार प्रदर्शित करेली करणी तथा करेलां चोमासां अने रचेला ग्रंथो जेम बने तेम शोध खोळ द्वारा हाथ करवा यत्न प्रयत्न चालुज रहेल छे. आशा छे के प्रत्येक विमलमतिवंत वाचको सुविचारणानुं वातावरण सबळ करी अमारा मनोबळने पुष्टि आपी धारणाने सफळता अपावशेज अने जनसमुदायनुं विशेष श्रेय चाही एज इच्छशेकेः—

सर्व जीवनुं शुभ थजो, जजो क्लेश कंकास;
संप जंप सजजो सदा, भजजो पुण्यप्रयास.

मौन एकादशी | सर्व जीवहित चिंतक
सं. १९७१ | शाह मंगळदास लल्लुभाइ.

तत्त्व पूरा समजावा एक चक्षु वडे ते वस्तुने
खुली रीते जुए छे. के जे बे चक्षु वडे विष्णु जोतो
नथी, त्रण चक्षुथी महादेव जोतो नथी. ब्रह्मा आठ
चक्षुथी जोतो नथी. छ चक्षुथी कार्तिकेय जोतो नथी,
वीस चक्षुथी रावण जोतो नथी. हजार चक्षुथी इंद्र जोइ
शकतो नथी. अने असंख्याता लोचनथी मनुष्यनो
समूह जे वस्तुने जोइ शकतो नथी. ते वस्तुने मात्र
ज्ञानरूप एक चक्षुथी विद्वान् पुरुष स्हेज रीते देखे छे.
" बुद्धि मात्रा यशोदत्ती " अर्थात् जेमनी मात्रा बुद्धि
छे. तो ए आचार्य तेवी तीव्र बुद्धिना धारक हता.
तेनी साथे उत्तम प्रकारनो विचार थइने धारण करनारा
हता. त्याग वैराग्य संयम निष्ठाना अंधकारक आचार्य-
श्रीने एनागुननो अर्थ शोभावतो हतो.

अने दयालु गुंजनो एमना गोरगोमनें विषे
निर्विकल्पतावडे करी निवास कर्यो होय नहि. तेम एम-
ना प्रतिबिंबनमां स्पष्ट प्रतिभास थाय छे.

निष्कपटता–सरळता–आर्जवता गुण एमनामां प्रशस्य हतो. एम एमना दरेक ग्रंथः कही वतावे छे. केमके कोइ पण ग्रंथमां " मारुं साचुं " ए आग्रह देखातो नथी. किन्तु प्रमाणिभूत अने स्वमत अभिनिवेश रहित एवा गीतार्थ कहे ते सद्दहवुं एवो उल्लेख दरेक स्थळे (ग्रंथे) देखवामां आवे छे.

मृदुता–गुणने अंगिकार करेल तेथी मान राजानी फोजने–जाति लाभ, कुल, मद, तप, विद्या, प्रभुता अने रुप ए मदोनुं जोर तेमनी पासे चाली शकतु नहतु एम तेमना वचनो कही वतावे छे.

भवभिरुता गुण–एमनामां केवी रीतनो हतो ते पण तेओश्रीना रचेला ग्रंथ जणावी दे छे. तेथी वाचकोने ते ग्रंथो वांचवाथी अथवा श्रवण करवाथी आपोआप मालूम पडे तेम छे.

शुद्ध प्ररुपकता गुण ते समयमां तेमनामां जेवो तेवो अन्योमां कम हशे. एम कहेवामां कंइ अति-

शयोक्ति गणाशे नहि. कारणके कोइनी दाक्षिण्यताथी वा कोइना संबंधथी अथवा दबाणथी पण उत्सूत्रनी प्ररुपणा करी नथी. किन्तु उत्सूत्र खंडन करी सूत्रपक्ष स्थापन करवामां कटिबद्ध थइ भव्य जीवोना उपकारार्थे श्री सिद्धान्तना बालावबोधादिक संपूर्ण श्रम लइ करेल देखाय छे.

दीर्घ दर्पि गुण–बालावबोध करवामां जे वापरेल छे ते आधुनिक समयमां श्री जैनशासनने बहु उपकारक थइ पडेल छे. उदाहरण तरीके संवत् १९५५नी सालमां यूरोपिअन पंडित हरमनजेकोबेए श्री आचारांग सूत्रनो तरजूमो अंग्रेजीमां करेल तेमां लखेल के " जैन मुनिओ मांस अदन करता हता " ते वखते न्युसपेपरोमां तेमज श्री जैन संघमां बहु चरचा चालेली हती अंते आ आपणा पूज्य आचार्ये करेल अर्थथी पंडित हरमनजेकोबेनी भूल सुधारवामां आवी हती, अने आचार्य ते पदोनो अर्थ वनस्पति विषयमां करेल ते स

जैन कोमने उपकारक थइ पडेल हतों. तेथी ते बीन
अनुभवी भव्योने आ आचार्यश्रीनी अर्थ करवामां द
द्रष्टि भविष्यकाळ माटे केटली लाभदायक थइ ते
जणाइ हती.

सम्यक्त्व गुण–ने तो तेमना उद्‌गारज क
आपे छे के–

श्लोक–त्वत्तःपरं नदेवं, मनसा ध्यायामि सर्वथा नाथ
वचसापि न स्तवीमि, प्रणमामि न मस्तकेनाहम्।

आपनाथी अन्य कोइपण देवने मनथी ध्यावुं नी
वचनथी स्तुति करुं नहि. कायाथी नमन–प्रणाम क
नहि." एटले वीतराग देवाधिदेवनेज हुं देव तरि
स्वीकारुं छुं.

"भाव विशुद्धि स्वामिन्, मम विज्ञाता त्वमेव सर्वज्ञ
किं बहुना गदितेन, प्रभु रेको मे त्वमेवासि ॥ १ ।

हे सर्वज्ञ हे स्वामिन् मारी भाव विशुद्धिने आप
जाणो छो. अधिक कहेवा वडे करीने शुं ? एकज

" त्रिहुं त्रिहुं अक्षर पद ठवीय, पढमक्खर जस नाम
" तास जिनेसर पय नमति, लप्भय निर्भय ठाम ॥१
मञ्जक्खर इत्यपि पाठ ॥१०॥१७॥ अंतक्खर इ
पाठ ॥६॥१५॥१९॥२३॥ इति श्री पार्श्वचंद्र सूरीश्वरकृत
जिनानां वस्तु प्रबंध स्तोत्रांतर्गत त्रयोदशतम जिन व
मध्यात् २४ जिननामार्थ प्रकटनं पं० लक्ष्मीकल्लोल ग
कृतं श्रायसे श्रीवृद्धये स्यात्.

आ काव्य समजवानो रीत आ प्रमाणे छे–

" १. जगतमां मनुष्यने रंजन करनार कया गुण छे
२. जगतमां पूजाना कारण कया गुण छे ?
३. जगतमां देह अने विद्याने शोभावनार कया गुण
४. जलमांथी तारनार कोण पुरुष छे ?
५. मयूरने खरेखर आनंद उत्पन्न करावनार कोण छे

आ प्रकारे पांच प्रश्न प्रादुर्भाव करेला छे.
एक एक प्रश्नना उत्तरमां त्रण त्रण अक्षरनो उत्तर आ
जोइए. तेमां पण पेला प्रश्नना उत्तरमां चोवीश तीर्थ

१३	१४	१५	१६	१७	१८
वि मनः	स मनः	वृत्त यो	यो वर्तं	सु यो व	यो मन
स कीर्त	स [illegible]	तुर्यो य	वो मन	[illegible]	[illegible]
स वर्ते	न [illegible]	तुष मे	[illegible]	तु नु यः [illegible]	[illegible]
मा विना	नः [illegible]	[illegible]	न [illegible]	[illegible]	[illegible]
स लिये	स लिये	[illegible]	न [illegible]	[illegible]	स लिये

१९	२०	२१	२२	२३	२४
वृत्त यो	तु विश	यो मर	यो [illegible]	वृत्त यो	यो मरा
मता म	वि [illegible]	म मर्व	[illegible]	[illegible]	[illegible]
सुष वि	सु [illegible]	वि मम	वि [illegible]	[illegible]	[illegible]
सुग मा	न [illegible]	मः [illegible]	मा [illegible]	सुष मः	[illegible]
सुरा मा	त [illegible]	स लिये	स लिय.	सुरा य	[illegible]

१३ [illegible] १४ [illegible] १५ [illegible] १६ [illegible] १७ [illegible] १८ [illegible] १९ [illegible]

करेल प्रश्नोमांथी निकळता जे उत्तरो तेना अर्थो नीचे मुजब छे–

सुजनं=सज्जनपणुं.
अधीत=भणेलो.
शृंगार=मनोहर रूपोऽ करवापणुं.
अवाप्त=पंडितपणुं.
सुभग=सौभाग्यपणुं.
अक्रोध=शान्तपणुं.
सुबुद्धि=उत्तम बुद्धि.
श्रीदद=दानीपणुं.
सुस्वर=सुंदर संगीतपणुं.
सुशील=सदाचारपणुं.
श्रेयस्वी=कल्याणकारीपणुं.
श्रीयुत=धनाढ्यपणुं.
विनय=नम्रपणुं.
अमर=देवपणुं अथवा नहीं मरवापणुं.
दमश्री=लक्ष्मीने सन्मार्गे आपवापणुं.
श्रीदायी=दानीपणुं.

सुधीरः=सारी रीते लक्ष्मीने आपनापणुं.
श्रीदः=दातारपणुं.
दत्तश्री=दानीपणुं.
मुनित्व=मुनिपणुं.
श्रीदः=दातारपणुं.
श्रीनयी=दातारपणुं.
पुण्यश्री=पवित्र लक्ष्मीवानपणुं.
श्रीदः=दातारपणुं.

ए चोवीस गुणो जनोने रंजन करनारा छे.

पटाद्रि=श्रेष्ठपणुं.
जिनत्वं=जिनेश्वरपणुं.
भगवं=विद्वानपणुं.
भिषक्का=वैद्यपणुं.
मननं=ज्ञानपणुं.

मगिपं=देव.
पापस्मर्=नपने सिखावनार (देव)
मगिपं=देव.
जिनार्थि=पापने जीतनार (देव)
मगिपं=देव
मगिपं=देव.
गुणप=सार्थ जश आपनार देव
मगिपं=देव.
पापस्मर्=पापीने वरावनार देव

मगिपं=देव.
गुणप=पार्श्वनाथीने तेनुं रता (देव)
मदिनान=निर्जरा करनार (देव)
मगिपं देव.
मगिपं=देव.
गुणप=सारा पानीवाळो (देव)
मगिनं=मनोरथ करनार (देव)
ए अर्थोने मोटना कुळने
नवावनार छे.

आ वाक्योनो अर्थ सामान्य जाणवा मारे कह्यो छे विशेष एमनो अर्थ गीतार्थ गुरुमहाराजथी धारी समजी इच्छा धारण करवो.

चरणौ सुमनं दमिनां प्रवरं, वरिश्वरि कर्म्मि जिनाधिपतिं.८
श्रीशंखेश्वर मंडन, खंडन घनविघ्न विघ्न राशीनां ॥
श्रीपार्श्वचंद्र प्रणत, सदा जय करो भूयाः प्रभो. ९. इति.

वळी प्राकृत भाषामां पण सरलपणुं आचार्यश्रीये केवुं वापरेल छे. ते आ नीचेथीज जणाशे.

सुर दीपिका.

सुणंतु भोभो अणुगइया सुरा,
जे वंतर जोइसियाय देवा.
वेमाणीय कप्पग कप्पतीया.
जे संति सम्मत्त विशुद्ध चित्ता. १
नामारिहंते ठवणारिहंते,
दव्वारिहंते जिण सासणम्मि ॥
हीलंति मन्नंति न पूयणिज्जे,
न मन्निया भाव जिणावि तेहिं. २
देवाय बालाय असंजयाय,
सुत्ता अधम्मी तह मंदबुद्धि.

असंवुडा नो विरइय नेमिं.
किंचित्ति भासंति सभा ममम्वं. ३
वयंनि नो किंचि विशेप नायं,
सामन्न भावेणय पन्नवंति.
मिच्छत्त समत्त गुणेग छुद्धिं,
कुणंति नेयाउय मेव नेयं. ४
गुरुण पासंमि सुयं सुनेमो,
वयं नु एयं न पडिस्सुणेमो.
सुत्तंपि मन्नंति न तेण तुम्हं,
पुरो जिणुत्तं वयणं भणेमो. ५
देवा जिणंदे पडिवोहयंति,
लोगंति याणाइ अणंति काले.
तिथ्थं पवत्तेह हियं जणाणं,
भणितु सामी भयवंति सव्व. ६
अंगंमि एयं पढमंमि वुत्तं,
पुणो दसाणं झयणे छमंमि.

अंगंमि छउंमिय तेण देवा,
मन्नामि बुद्धाणय बोहगाणं. ७
शुद्धो वयेसेण जिणा सुराणं,
बुद्दसंति मुज्जंनि न ते सुहेहिं.
जेठेण नम्हा गुरु कारणेणं,
बाला भणिस्संति कहं नु देवा. ८

॥ श्री नेमीश्वर स्तुतिः ॥

जीणंद नेमि इह विन्नवेमिं,
माणुस्सयं सप्पणयं करेमि.
जणा जिणाणा महियं महंति,
किं नु विहिंसा अजया गिहंति. १
रुद्धेय वाडेद्दिय पंज्जरेहिं,
दट्ठूण दीणकरुणस्सरेहिं.
एतेसु जे ते नपुणो हवंति,
वेराणु बद्धा नरयं उवंती. २
तम्मोयणेणं इति सिख वित्ता,

को तस्स दोसो नयकम्म दंसी,
पच्छा परिन्नाय मलावयंसी. ७
जिणुत्त तत्तं न समायरेसि,
सद्धं कहं सिद्धि सुहे करेसि.
जउ सद्दु-यं कुणइ तितिक्खं,
तम्हा मुणी खिप्प मुवेई मुक्खं. ८
कोहं च माणं तह लोह मायं,
एगं खणं कुज्जसि नोपमायं,
चित्ते जिणागं न धरेसि सत्ती,
कालो वणीए सरीस्स मेए. ९
अहं शिवानंदण राय पाय,
प्पसाय पेहो अलि नील काप.
सुरक्खणिज्जो सरगंमि पत्तो,
अप्पाग रकीय चर प्पमत्तो. १०
दिक्कं गहेउण गउ सुग्राणे,
गओ गओ सिद्ध महोवसाणे.
पागंतगेवि पहु भत्ति सिस्से,

न तेसु मिक्खू मगता पउस्से. ११
कहं तद्दा नाह पहु पयाणे,
सिद्धीइ मझं परमिथ्थ जाणे.
जिणप्प दे सं सुयदिन्नसोहं,
मायं न सेवे पय हिज्जसोहं. १२
काउं तवुत्तं सयलं समथ्थो,
नाहं पहु मोह गहेहिंयथ्थो.
करेमि झ्झं तुह होउ सेउ,
कंखे गुणे जाव शरीरमेड. १३
आबाल बंभं विमलं चरित्ता,
अच्छेरयं सयजणे करित्ता.
नेमी निरीहो दसचाव देहो,
पत्तोय सिद्धिं सुगुणाण गेहो. १४
कलश–सिरि नेमि जिणेसर पणय
सुरेसर वंदों भावें मो मविय.
समसिय पयछंदें मन आणंदे
इम संथ्थविय श्रीपार्श्वचंदे. इति. १

वली प्रतिमा उत्थापक जीवोना उपर करुणा ला
तेमने बोध करवा माटे पण ग्रंथ सरळ, स्तवनो,
गुजराति भाषामां बनावेलां छे. तेमांना बे स्तवन
हुं छपरावुं छुं. ते अग्गाने नहिन गमाव.

१ श्री महावीर स्वामीनुं स्तवन.

(पारनाथ बीराजी पूरब कोरे थं.हान, ए दाग.)

ज्ञान सम्यक्त्व दीपतोजी. श्री सिद्धारथ भूपः
त्रिशला राणी नंदनोजी, इन्द्राणी समरूप.
गुण सीपरे भावी, मुणो सियाणोरे जाण.
वीर जिन चोवीसमाजी, भक्तिये नमु पाप त्याग. सु
महाभवे मनुने पेखतांजी, मूरति मूरति थाप:
दीठे दरिसण स्वामीनाजी, किम ते दूर पलाय. सु
भ्रम भूला भोला भणेजी, एह अजीव म जोय:
एहने भक्ते वंदतांजी, इम किम समकित होय. सु
मां मां एम न भालीयेजी, ए असमंजस वाणी,
प्रतिमा न उथापियेजी, ए मति मानो जाणी. सु
जिन सरखी प्रतिमा भणीजी, जिनवर तणीय विच

(कलश.)

इम वीर जिनवर सयल सुखकर, तीर्थनायक सुरतरु;
जन आश पूरण दुरित चूरण, रूप त्रिभुवन मनहरु.
नागोर महिमा जासु पूरण, तेह स्वामी संस्तव्यो;
मनरंग छंदे (सूरी) श्री पार्श्वचंद्रे मुक्ति कारण वीनव्यो.इति.

२ ॥ श्री धर्म शांति पार्श्व जिन स्तवन.॥

मेडते नयरे मुझ चित्त आणंदिय,
धर्मजिण शांतिजिण पासजिण वंदीये;
त्रिहुय प्रसादहि तिन्नि तिथ्थंकरा,
नामने ठवण अरिहंत जण सुहंकरा. १
ठवण विणुं नाम हुवे ठवण तिणि विणु नही,
दुन्निनिक्षेप इणे नयरे लहीये सही;
द्रव्य अरिहंतनो मरम केवली लहे,
भाव अरिहंतनो विरह सहुये कहे. २
भावसुं भाव अरिहंत आराधिये,
सूत्रनी साखनो मुक्ति सुख साधिये;
त्रिणि निक्षेप नामादि त्रिण जोडीये.

भाव जिन शकस्तव सूत्रे दीसे नहि,
तेह कारण कहो कोइ गुरु मुखे लही;
ठवणजिण संख नहु लाभिये जेहनी,
जेहथी पापमति जाय सवि देहनी. ८
द्रष्टिथी पुंठीनो राग अधिका गणी,
भगतिने भाव इम थुण्यो त्रिभुवन धणी;
पनरमो सोलमो देव त्रेत्रीशमो,
मूरति जोवतां चित्त थिर वीसमो. ९
वज्र मृग भुजंग जसु लंछण सोहये,
निरुपम रूप जग त्रिभुवन मोहये;
स्वामिय मागिये एह सुपसाउलो,
भवि भवि थाइज्यो तुम्हे मुझ राउलो. १०
कलश–एणीपरे श्रीमेदिनी पुरि त्रिणे तीरथ वंदीये,
त्रिहु भवने महिमा जासु दिपे देखी मन आणंदीये;
श्रीमानु विश्वसेनराय अश्वसेन कुले दीपक अवतर्या,
तेमनआणंदे सूरि श्रीपार्श्वचंदे भावजिन जिम संस्तव्या.११
तेज विपसनी एक सज्झाय पण वाचकवृंदने

वांचवी जोइये. कारणके तेथी वाचकवृंदने खातरी थशे के ते सर्वोना भव्योने सन्मार्ग दोरवा माटे अने तत्-त्समांज उत्पन्न थयेल लुंपकने जडामूलथी दूर करवा माटे आचार्यश्रीये केवो उत्तम प्रयत्न करेल छे.—

॥ श्री जिन प्रतिमा सज्झाय. ॥

(महाविदेह क्षेत्रमां श्री मंदरस्वामी, सोनाना सिंहासनजी; ए राग.)

सांभलो भविक जन चित्त चेतन धरी,
जिनवर आगम वाणीजी;
भवसागर तरवा तरणी जिम,
लहियो उत्तम प्राणीजी. ए टेक.
जिनवर जिन प्रतिमा वंदन फल,
समवड हियडे आणोजी;
रायपसेणी सूत्रे वखाण्यो,
चतुर विचारी जाणोजी. सांभलो. १
छेद ग्रंथे जिनवर विधि वादे,
प्रतिमा भक्ति प्रकाशीजी;
व्रतधारक श्रावकनी करणी,
जोजो हृदय विमासीजी. सांभलो. २

समग अंग दीसे विकारी,
आगंदने अभिसारेजी:
जिन प्रतिमा नमे पद्मप्रहारी,
धनधन ते नरनारीजी. सांभलो. ३
पडया पछी महु कोइ मनीजे,
पहिलुं आप संभालोजी;
प्रतिमा वंदो उत्साइ उमंगे,
अंबड जेम त्यो लाहोजी. सांभलो. ४
अवधि असाधु तणी बहु देखी,
ढाला तमे कांइ डोलोजी:
किणहि कुसंगे कनक मल लाग्यो,
पीतल तोले म तोलोजी. सांभलो. ५
सोना जेम नीरमल कस लीजे,
दोष प्रवादे न दीजेजी:
वीतराग प्रतिमा वंदीजे,
राउ राणी खेखीजेजी. सांभलो. ६
मिथ्यापरसुं संकरो सगाइ,
प्रभुसुं फेरी सवाइ जी:

ॐ

श्री सद्गुरुवर्य

श्री पार्श्वचंद्रसूरीश्वरजीनुं.

संक्षिप्त जीवन-चरित्र.

वस्तुनिर्देशात्मक—मंगलाचरण.

(शार्दूलविक्रीडित-छंदः)

तीर्थेशजिनेश्वरस्यविदिते श्री कोटिकाख्येगणे ।
श्रीमच्चन्द्रकुलेनवोरुह बृहद्गच्छे परिस्लायिते ॥
श्रीमन्नागपुरीय कायद्रु तपा शाखावदातेधुना ।
स्फूर्जद्भूरिगुणान्विता गणधरश्रेणी सदा राजते ॥ १ ॥

अर्थ—चरम तीर्थंकर श्री वीरजिनेश्वर देवाधिदेवना तीर्थशासनने विषे विश्वविख्यात श्री कोटिकनामना गच्छमां श्रीमान् चंद्र

क्रियाने विषे आदर करवा लाग्या, ते श्री पार्श्वचंद्रसूरींद्र युगप्रधान भट्टारकोत्तम मन्ये अमे स्तविये छीए. कारण के जे गुरुना परिचयथी लोह रूप प्राणियो पण पार्श्व (पारस) मणिरूप गुरुनी उपासना वडे स्वप्रकाशमय सुवर्णत्वनो लाभ पामे छे, अने जे गुरुना मुखचंद्रना दर्शनथी सांसारिक श्रम तापथी संतप्त थयेला जगत् जीवोने शीतलता-शांति प्राप्त थाय छे, ए माटेज ए पार्श्व अने चंद्रनी पूरेपूरी गरजने सारनार श्रीपार्श्वचंद्रसूरींद्रजीने अमे स्तविये छिये.

(दोहरा-छंद.)

सुरमणिसम श्रीसद्गुरु, छो शाश्वत सुखसदन;
वनिस्क प्रणमुं नेमथी, परम पूज्य पदपद्म. १
भास्वर जाति प्रभाकरु, विमला मान मन्दार;
परचा पूरण गच्छपति, जिनशासनशृंगार. २
परम पुनीत [१]हमीरपुर, विश्वविदित वर वंश;

---

१ ॥ चिंछियानी देशी. ॥

हरि लाला पासचंद्रसूरीसरु, वडतपगछनमंडिणकारे लाला ॥ भाटूरीय पासवें, पुरहमीर जनम सुखकारे लाला ॥पा० ॥ १ ॥ वेलगवंशे दीपता, शाह वेलग पिताशुभसंसारे लाला ॥ विमलादेमाता सही, सुत तेहना तेज अनंतरे लाला ॥पा० ॥ २ ॥ पंदरहसें साडत्रीसमें, शुभ चैत्र नवमी भृगुवारे लाला ॥ उत्तम लगनमें जनमिया जग आणंद ज्योति अपाररे लाला ॥ पा० ॥ ३ ॥ जिनवाणी सुण

ए उपकारक आपनो, भगवन्! केम मुकाय?
अनुभव अंकुर ऊगियो, विभु! ते केम विसराय? ७

आभारी कीधा अमो, इत्यादि करि काम;
स्मरण थता ए सर्वनुं, नमुं चरित्र ललाम. ८

गुण गरिमा गावा विषे, उर इच्छा छे इष्ट;
कृपा करी दो प्रभुजी! वाणि विशिष्ट अभिष्ट. ९

भविजनमनभावनि कथा, कलिमलहारि नवीन!
शुद्ध मंगलमय आपनी, कृति संक्षिप्त करीन. १०

भयहर भंजन दुःखभर, हाजर रहे हमेश;
मङ्गल संपदा सर्वदा, कापे सर्वे क्लेश. ११

ए पण महिमा आपनो, सत्यपणे सुप्रसिद्ध;
नाम जप्ये नित मति रहे, ऋद्धिसिद्धि सांनिध्य. १२

जयति जयति जगवंद्य प्रभु, धर्मधुरंधर धीर,
जंगमतीर्थ जयंकर, जय जगवत्सल वीर! १३

इत्यादि पण स्वर्गमां न हतां; परंतु हर्षपुरमां ए सघळां विद्यमान हतां जेथी स्वर्ग हर्षपुरनी ईर्ष्याकारमां पडवा पडी जतां चर्मचक्षुओथी अदृश्य थइ रहेल जणाय छे !

हर्षपुरमां अढारे वर्णो पोतपोताना धर्मनियमने अमलमां आणतां आनंदमां निवास करतां हतां. श्रावकोनो पण पुष्कळ जत्थो हतो. जिनमंदिरो पण भव्यतापूर्ण विशेष हतां अने अन्य धर्मस्थानो तथा अन्यधर्मनां देवळो, बागबगीचा अने आनंददायी आश्रमो नाम रमाने कामना उपयोगमां आवतां जणातां हतां.

हर्षपुरमां आ बाबतोना मनने शान्तकरी तरफथी कर दंड न हता. पण जैनसाधुओ अने संन्यासियोना हाथमां दंड (करदंड) हता. वधबंधन फक्त पुष्पगुंथन अने स्त्रीओनी वेणीविरचनमांज जणातुं हतुं. कठोरता कुचोमां, गजाकांशोमां पाणीआरीना जळाशयनां, मार फक्त भोगसाधनोमां, वक्रता कामिनियोनी भ्रमरोमां, निष्ठुरता दुष्कर्म छेदन करवामां अने मदन्धता मन्मथ शासनमां मालूम पडती हती.

हर्षपुरनी आसपास कूवा वावडी कुंड वगेरे पुष्कळ मनहर नळकीय जळाशयो जणातां हतां अने स्वच्छोस्वच्छ पाणीनी परबो, दानशाळाओ, पाठशाळाओ, उद्योगशाळाओ, पुस्तकशाळाओ, तथा वांचनालयो आदि दृष्टिगोचर थतां जिज्ञासु जनने अति आनंद मळ

व्रत नियम धारण करी दिवसनी सफळतानुं चिन्ह सूचित करवुं. तदनंतर पतिने जोइतां साधनो हाजर राखी घरनां काममां जोडावुं ते पछी यथाशक्ति देवदर्शन, गुरुवंदन अने वीतरागप्रणीत वाणीनो लाभ लेवा जवुं, अने ते पछी पुनः गृहस्थियोना नित्यक्रममां तत्पर रहेवुं.

ज्यारे रसवति तैयार थाय त्यारे प्रेमपूर्वक सुसाधु साध्वी अभ्यागत आदिने आहार पाणीथी प्रतिलाभी पुन्यभागी थवुं. ते पछी ज्ञानगोष्ठी, नीति, सदाचार के धर्मतत्त्व भर्यां पुस्तको वांची विचारी मनन करवां.

वडीलोनी आज्ञानुसार वर्तवुं ए विमळकुळवंती वनिताओनी उत्तम विभूती छे, जेथी आज्ञा शिरोधार्य करी सद्वर्तनमां मशगुल रहेवुं. पोतानी शक्तिना अनुसारे वस्त्रालंकार धारण करवां, आवक खर्चनो विचार खूब ध्यानमां राखी उडाउ खर्चोने अटकाववां, परोणा पइ सगांसंबंधी आदिनो सत्कार साचववामां विवेकी रहेवुं. कोइ वखते पण उंचे स्वरे, कठोरतायुक्त, अप्रिय अने हृदयो चिरा भाषण करी कोइनुं दिल दुभाववुं नहीं. व्यर्थ विचार करवो नहीं. म्हेणां टोणां मर्मभेदक वचनो के असभ्य भाषणनो उपयोग करवो नहीं. पतिने कोइ वाते कंटाळो आपवो नहीं. तेमने धर्म अर्थ संपादन करवामां विरोधाभास बतावतो नहीं. गफलत, अदेखाइ, अनडापणुं, अविवेक, हदपार कंजुसाइ, बेहद उदारता, गर्व, क्रोध,

भूषण छे. पतिने आवता देखी स्त्रीए ऊठी ऊभा थवुं, नमनताइयुक्त भाषण करवुं, पतिचरणमां नजर जोडी तेमने योग्य आसन आपवुं, अने सेवामां तत्पर रही पतिने सर्व प्रकारे आनंद आपवो; केमके स्त्रीओनुं परमभूषण पतिव्रतापणुंज छे. जे स्त्री पतिने प्रसन्नता प्राप्त करी शकती नथी ते स्त्रीज गणाती नथी. तात्पर्य एज के जे स्त्री पतिने पूर्ण प्रसन्न राखे छे तेज स्त्री उत्तम मनाय छे. जेथी जो हुं तेवी उत्तम कुळशाळी स्त्रीओनी पंक्तिमां आसन लेवा उमंगी होउं तो तेमना उत्तम वर्त्तनने केम मान न आपुं ? पतिनी जे विचारणा तेज मारी विचारणा छे. पतिनी अर्द्धांगना कहेवाया पछी विचारनी भिन्नता बताववाने दरकारज नथी; मतलब के जे अरधुं अंग धारे ते बाकीना अरधा अंगने स्वीकारीज लेवुं शोभायमान छे." इत्यादि स्वधर्म संबंधी वार्तालाप करी दंपति आनंद साथ पोतपोताना नित्यनियममां निमग्न थयां.

प्रभाविक गर्भना प्रभावथी विमलादेवीने देवदर्शन, पूजन, प्रभावना, तीर्थवंदन, गुरुभक्ति, धर्मकरणी, दान देवुं अने सद्धर्मनां फरमानो श्रवण करी तेने अमलमां आणवा इत्यादि इत्यादि डोहला (दृढ विचार) उत्पन्न थवा लाग्या.

ज्यारे उत्तमकर्मी जीव गर्भमां उत्पन्न थाय छे त्यारे ते सगर्भा स्त्रीना विचारो उत्तम कार्यो भणीज दोराय छे, अने भावाभावा पण तमदा प्रकारना थाय छे.

वानीज दृढ संकल्प धरावती हती. पूर्वीने बाळक बादशाह औरंग-जेब जेवाने पण तोबाह पोकरावनार वीरमणि नीवड्यो. एवुं माताना विचारनी असर गर्भमां अने खोळामां रहेनारा बाळक पर ओछी थई कहेवाशे ?

नेपोलियन बोनापार्टनी माता पण सगर्भावस्था वखते लडाईनी सामील थई निपुण नीवडी होवाथी तेज संकल्प वडे तेवोज पुत्र थयो के जेणे स्वप्नमां पण फतेह पामवानी शंका उपजे तेवो लडाइओमां तेणे फतेह मेळवी, आ बधो प्रताप मातानी दृढ विचारणानोज हतो.

एक बखत एक सीदी बादशाहना चित्र पर बहुज प्यार राखती होवाथी सगर्भावस्थामां पण तेणीनी नेम चित्र पर लगनी कायम रही हती जेथी गोरांग देवनुं बाळक छतां पण सीदीना जेवा काळा रंगनुं, ओकडीभाळवाळुं, चीपी आंखो अने जाडा होठ आदि चिन्ह-वाळुं थयुं. शुं मननी असर गर्भ पर केवी थाय छे ए जाणवा जायो पण वधारे दाखलानी जरुर छे !

पूर्वाचार्यो अने पाश्चिमात्य विद्वानो कबूल करे छे के, जे जे विचारो पिताना अने तेमां पण विशेष करीने माताना जेवा विचार अने तेणीनी जेवी चाल चलगत तथा केळवणी होय तेवीज ओलाद गुणी अगर दुर्गुणी पेदा थाय छे. अने विवेचमां कहिये तो माता पोताना मनयोग प्रमाणे संतती बनाववी धारे तेवा पेदा थाय छे एटले के जो खोड खांपण वगरनी, बुद्धिशाळी, रूपशाळी, कला

आपी शके छे, अने आ संबंधना सैकडो नहीं बल्के बेसुमार दाखला तैयार छे.

(आ बाबतनी माहेती मेळववी होय तो कल्पसूत्रमां वीरमाताना गर्भसमयनो प्रसंग तथा विवेकविलास ग्रन्थनो पांचमो उल्लास, अने प्रमाण सहस्रीनुं आचार प्रकरण अवलोकन करवुं.)

मतलब एज के, गर्भसमयमां के पुत्र होसमां आववां लगीना समयमां जे जे विचार विशेषपणे करवामां आवे ते ते विचारनुं वातावरण धीरे धीरे वधतां सघन बनी तेज विचारोने पुष्ट बनावे छे.

तेमज प्रत्येक पुस्तको पुकारी पुकारीने कही रहेल छे के, मनोबळवडेज जे सिद्धि के असिद्धि साध्य करवी धारे तेज थइ शके छे; केमके—

मनकी हारें हार है, मनकी जीतें जीत;
वेग परमपद पाइये, मनहीकी परतीत ! १

वाचकवृंद ! आम होवाने लीधेज माता विमळादे पण पोताना पुत्र पासचंद्रमां उत्तम रूप गुण दाखलकारी शक्यां हतां, अने पोते तेज सदाचार मुजब वर्ती पुत्रना मनमां स्वधर्म वगेरेना संस्कारनी सचोट असर करवा भाग्यशाळी थयां हतां.

भमरी विचारबळना संस्कारवडे इयळने पोताना समान बनावी शके छे, गुंजनी दोरीपर लागेली माखीनी हवारमांथी संस्कारे फूंदीनो उगाडी शकाय छे, पहेला दिवसनी वाछडीना छाणथी

संस्कारवडे कणेरनो छोड दगाडी शकाय छे, अरडूसीना छोडने संस्कारे आपवाथी (तेने) मोगरानो छोड बनावी जइ मोगरानां फूल आवतां करी शकाय छे, अने गुलाबना छोडने पांच जातना रंगनी कलमोनो संस्कार करतां एकज छोडपर पांचे रंगनां गुलाब पुष्पो आवी शके छे. ए बधो प्रकार संस्कारनी पूर्णतानोज छे. अपूर्ण संस्कार अगर मर्यादाभ्रष्ट संस्कार आपवाथी धारेली धारणा सफळताने नहीं पण असफळतानेज भेटे छे.

माता विमळादेए पोताना फरजंदने नामांकित करवानी तालीम गुरु कुलद्वारा पूरेपूरी मेळवी हती अने जननी पण पूरेपूरी आपी हती, जेथी तेमना पुत्रने आज कवी सद्भावे के दुर्भावे पण लाखो मानव याद करी रह्या छे. तो कहेवुंज योग्य छे के-

जाणी शोभा जगतनी, जाणो जीवित धन्य!
जीवन ही मृत्यु मरे, सुणी कुशोभा कन्य!

प्रिय पाठको! धन्य जन्म तेनोज छे के-

(पाटवे ने पहेलुं जोरनुं—ए राह.)

हिन्द धारी देवनी हाम, धन्य जन्म धरिया!
कर्या देशद्रोहीनां काम, ए शिर अवतरिया! १
वात्सल्य पराहित नित चित्त, धन्य जन्म धरिया!
चोर्युं शत्रुनां चित्त, ए शिर अवतरिया! २

जेनो मरण थई जाशहार, फेर जन्म धरिया !
 भर्या मुंडाना भंडार, ए शिर अवतरिया ? २
होत्युं मन भवर लिपाय, फेर जन्म धरिया !
 वहि वर्पु नहीं वपराय, ए शिर अवतरिया ? ४
पाणी जेने अहिंसा थये, फेर जन्म धरिया !
 कदा हिंसादिक दुःख, ए शिर अवतरिया ! ५
हे ... पुरुष, फेर जन्म धरिया !
 शुभ भावना ... , ए शिर अवतरिया ! ६
[illegible]
 ... , ए शिर अवतरिया ! ७
बोल्या जे लाखे बोल, फेर जन्म धरिया ?
 करे बोल्या बोल अबोल, ए शिर अवतरिया ! ८
जे पूर्णचंद्र सद्रूप, फेर जन्म धरिया !
 थेवरपणो न करे सार, ए शिर अवतरिया ! ९

वांचनार ! आशय एज के जेणे उत्तम जन्म सार्थक कर्यानो मार्ग मुक्यो होय छे तेओज धन्यातिधन्य पद पामेल मनाय छे. आपणो परिचनायक पण जेरोज हतो एटले के चंद्रनी पेठे शांत दर्शनवंत, जनवल्लभ, मनहर मूर्तिवाळो, चंद्रहास्य, अने चमक-दमक दुमदमी थाळ सहित पुंजवाळा बाळनी उमरथी बेशकोने आनंद आपवा लाग्यो. तेवम ज्यारे पांच वर्षनी वयनो थयो

सिवाय पूर्ण आनंदथी निशाळ ग्रहण उत्सव करी शुभ पार्श्वचंद्रने पाठशाळामां पधरावी सुशिक्षित शिक्षकना हाथमां सोंपी विद्यासंपत्ति स्वाधीन कराववा मांडी.

विद्यार्थीओ ! जेम सुवर्णनी अंदर कांति विद्यमानज होय छे, ते फक्त पॉलीश–ओप चढतांनी शाणेज अमल झगझगाटी मळतो आवे छे, जेम खाणमांथी निकळेला रत्नमां अमूल्यपणुं विद्यमानज होय छे, ते फक्त सराणने हाथ चढतांज ते अमूल्यता जाहेरमां मूकी शके छे, जेम शीशीमां पेक करेली कस्तूरी अथवा कोइ मनहर सुगंधी पदार्थ पोतानामां रहेली जनमनहरण खुशबु गोपवी रहेल होय छे, ते फक्त बूच खोल्यांज तेनो परिमळ प्रसरावी मानवनां मन पोताना भणी आकर्षे छे, जेम एन्जीनोनी अंदर अत्यंत गति आपी धारेली धारणा पार पाडवानुं सामर्थ्य विद्यमान होय छे, ते फक्त पावर आपवानी कळनो इशारो मळतांज पोतानी अपूर्व शक्ति आचारमां आणे छे, तेम पूर्वसंचित पुन्यशाळी प्रभाविक पुरुषोमां सद्गुणो, विद्या, आत्मबळ आदि विद्यमानज होय छे, ते फक्त उस्तादना हाथनो स्पर्श थतांज अंतरमां रहेली छुपेरान प्रकटी आनंद आपवा लागे छे.

कुमार पार्श्वचंद्रना अंतःकरणमां पूर्वपुन्यसंयोगथी अने सास-न्मना सिद्धांतथी कहीये तो पूर्वना प्राप्त करेला अभ्यासयोगथी

रेवा विद्यमानज हती ते फक्त विद्यागुरुना संयोगथी आहेरमां आवेली जणाया लागी.

दाखला रजु करवानी जरुर छे के—

नुदियारना रहेनार श्री गौरांग महा मभुए पण बाल्यपमां असाधारण बुद्धिबळ बतावी महासमर्थ विद्वानोनो जय करी धर्मनी संस्थापना करी हतो.

महात्मा बुद्धमां पण बाल्यावस्थाथी अपरिमित बुद्धिबळ हतुं. जेथी तेमणे दुनियाना मोटा भागमां बौद्धधर्म फेलाव्यो हतो.

भक्त प्रल्हादमां पण बाळपणथी अत्यंत भक्तिभाव अने दृढ श्रद्धा हती.

पंडित गट्टुलालजी तेमज शास्त्री काळीदास गोविंदजी पण यगीज न्हानी उमरमां संस्कृत भाषाना सारा अधिकारी नीवडया हता.

सूक्ष्म वायुमां अमुक प्रकारनुं स्फुरण थवाथी प्रकाश उत्पन्न थाय छे, ए विद्यानुं शोधन करनार डॉ. यंग बे वर्षनी उमरे तो ते छटा पूर्ण वांची शकतो हतो! चार वर्षनो थतां पहेलां तेणे बाइबल बे वखत पूरुं वांच्युं हतुं! सात वर्षनी उमरे गणित-शास्त्र शीख्यो हतो. ते पछी लेटीन, ग्रीक, हीब्रु, फ्रेंच, इटालियन भाषाओ, गणित नामुं, इजनेरी काम, दुर्बीन बनाववानुं काम संपूर्ण रीतें शीखी मशहूर नीवडयो हतो, अने चौद वर्षनी उमर पहेलां ते पूर्व प्रदेशनी भाषामां पण शोख धरावतो हतो.

विलीयम रोवन हेमील्टन पण वर्षनी उमर पहेलां हिब्रु भाषानो अभ्यास करतो हतो. सात वर्षनी उमरे तो ते भाषानी दृष्टि विषे डब्लीननी ट्रिनिटी कोलेजना फेलोने कबूल करवुं पडयुं हतुं के कोलेजमां फेलोना उमेदवारोमां पण आना करतां विशेष ज्ञान नथी. तेर वर्षनी उमरे तेर जातनी भाषा शीखी निपुण थयो हतो. युरोपमां हाल चालती भाषाओ उपरांत अरबी, फारसी, संस्कृत हिंदि अने मलय भाषा पण सारी रीते मेळवी हती. डब्लीनमां इरानथी एक एल्ची (वकील) आव्यो हतो ते वखते फारसी भाषामां आपवानुं मानपत्र तेणे चौद वर्षनी उमरे लख्युं हतुं जेथी ते एल्ची अचंबो पाम्यो हतो अने गणित वगेरेमां पण घणो हुशीआर होवाथी गुर्हीनिनो साथी थयो हतो.

एम विक्टोरियन सारदोना प्रमुखपणा नीचे चालती सोसाइटी ओफ ड्रामेटीक ओथर्स नामनी संस्थानी अंदर एक दश वर्षनी छोडी हती तेणे घणां नाटको रच्यां हतां. ते घणीज नानी वयमां लखी शकती हती. तेनी मा पुछती तो ते कहेती के-मने लखतां वांचतां शीखवानी बहु जरुर नथी; केमके हुं ज्यां ज्यां दृष्टि फेरवुं छुं अने जे वस्तु जोवा जाणवानी इच्छा राखुं छुं त्यां तो मने तुरतज एनी मेळे तेनुं ज्ञान थइ आवे छे !

न्यु वर्न्सवीक प्रगणाना डोनाल्ड मरफी नामना छोकराए छ वर्षनी उमरे एक नवाइ जेवा रमकडानुं पेटंट मेळव्युं हतुं.

गुंथाया; परंतु भवितव्यतानी मचळनाना संयोगने लीधे ते असान
अंदर उपकारी गुरुराज पंडित साधुरत्नमीनुं त्यां पधारवुं थयुं. ए
संघने खबर मळतांज स्हामैयुं करी मुनिराजजीने वस्तिमां पधराव्य
विनय मर्यादा युक्त गुरु-वंदन भक्ति वैयावच्चादि साचवी सं
समुदाय आनंद पाम्यो, अने गुरुराजनी गुण गरिमामां लीन बनी
चंद्र चकोरनी पेठे जिज्ञासुओ जिनभाषित वाणिनो लाभ लेव
उत्सुक रह्या.

योग्य जीवोहितार्थ साधु वर्गमां रत्न सरखा साधुरत्न मुनिराजे
समयोचित संसारनी असारता तथा धर्म-साधनथी प्राप्त थत
अलभ्य लाभ संबंधी जिन प्ररुपित वाणि श्रवण कराववी शरु करी
अने दाखला-दलील-शंका-समाधान-तर्क-वितर्क वगेरेना निर्णय
साथ मधुर, अविवादि, मर्मभेद रहित, ममत्व विनानी, सरळ, सर्व
हितकारिणी व्याख्या वडे भाविक भक्तोने घणो आनंद आप्यो.

व्याख्यान सांभळवाथी पासचंद कुंवरनी स्वधर्म उपर विशे
रुची उत्पन्न थइ एथी प्रति दिवस गुरुराज पासे आवी धर्मचर्चानुं
व्यसन अख्तियार करवा लाग्या.

गुरुराजे तेमनी तर्कशक्ति, ग्रहणधारणाशक्ति, धर्मदृढता, अने
त साथे लक्षण व्यंजन युक्त उत्तम शरीरकांति आदि निहाळी
शासनप्रभाविक पुरुषनी लायकात धरावनार जाणी पासचंद कुंवरने
अंतरना उमंळका पूर्वक गुप्त रहस्य समजाववुं शरु कर्युं.

हमेशानो नियमज छे के, निर्लोभी गुरु गीतार्थ होवा छतां पण सुयोग्य शिष्य शोधवानी स्पृहा राखे छे. तो पछी योग्य शिष्यनी प्राप्ति माटे मायुरत्न मायुरत्न मुनीश्वर केम स्पृहा न राखे ? अलबत्त राखे ! उत्तम शिष्य मंडली पण स्वधर्मोन्नतिनी पताका दिगंत सुधी फरकाववानुं मुख्य साधन छे ने सर्वथी प्रथम हाथ करवानी जरूरज होय छे. ज्यारे सुगुरु उत्तम शिष्यनी शोधमां कटिबद्ध रहे छे, त्यारे उत्तम शिष्यो सुगुरुनी शोधमां केम न रहे? बेशक रहेज! अने ज्यारे उत्तम गुरु शिष्यनो संयोग स्वाधीन थाय त्यारे पछी अवसगन शी रही ? ! अर्थात् धारेला अर्थनी प्राप्ति पण पुन्य प्रकृतिनी परमानुकूलता गणाय छे.

आम होवाने लीधे गुणराज पासचंद कुंवरनो मन स्वधर्मनो विनय करवा तत्पर रही संसारनी असारताना हावेहूब विचार करती पासचंद कुंवरनुं मन संसारनां क्षणिक सुखो उपरथी उद्विग्न करी दीधुं, एथी मन फरकतुं एटले परम वैराग्य प्रकट थतां अकथनीय आनंदनी रेलम छेल थती जणाइ.

माता पिताने जाण बहार नहतुं के, पुत्र संसार जाळमां फसाइ रहेशे ? तेओए तो गर्भसमयथीज निश्चय कर्यो हतो के, पुत्र संसारनी मोहमायाथी दिन प्रतिदिन क्षीण थइ आखर बीजना चंद्रनी पेठे अगरवंश थशेज! अने तेवुंज थवाना संयोगोए सानुकूलता मार हाजरी आपी एटले पछी प्रतीतिमां शंकाने स्थान मळेज स्यानुं?

स्वप्नेनी आगाही अने जन्मकुंडलीमां पडेला दीक्षितग्रहयोग, फळा निधियोग अने अंशावतार योग आदि शुभयोगी ग्रहो स्वगृहि मित्र आदि सुसंयोगवाळा पूर्ण दृष्टिवंत (जन्मकुंडलीमां) मौजूद हता, एथी खात्रीमां जरापण शंका नहतो के, निर्ग्रंथ-विद्वान्-राजपूज्य-प्रभाविक, स्पृहा रहित अने मायामयि संसारथी पर थया विना रहेनारज नथी ?

माता पिताए आत्म-कल्याण अने जगत-कल्याणना कारणने ध्यानमां लइ कुलदीपक कुंवरने जैन-दीक्षा अंगिकार करवामां अनुमति आपी अने दीक्षा-महोत्सवनो अट्ठाइ महोत्सव आदरीने तेओ जैनोप्रतिमां दृढानुरागी थयां.

'भावतुं हतुं ने वैद्ये कह्युं-' एवो संयोग मळतांज कुंवर अति प्रसन्न थया, अने जेम आलान (हाथीशाळा) नां बंधन छोडी गजराज बंधन रहित थवा आतुर थाय तेम संसार-बंधन छोडवा पासचंद कुंवर अत्यातुर थया.

जे जे गृहस्थाश्रमने शोभावी शके ते ते क्रियाओ (ज्ञातिभोजन, अतिथियोनो आदर, सत्कार, वडीलोनो विनय, देव गुरुनी पूर्ण श्रद्धापूर्वक भक्ति, अभयदान संबंधी अमारी प्रतिघोषणा, याचकों, सेवकोने दान दक्षिणा-अने मंगळ गीत वाजीत्रादिकनो आनंद पूर्ण उदार दिल वडे उपयोग कर्यो. जैन-भ्राताओए लघु वयमां वैराग्य

अने सिद्धादिनी साक्षिना चमत्कारथी मग्न थइ घर घर आनंदोत्सव शरु करी शेरियो तोरण-ध्वजा पताका-गीत-वाजींत्र, तथा सुकृत्य अने मिष्टान्न भोजनादिवडे अंतरनो उमळको प्रदर्शित कर्यो. उत्तमकार्य प्रसंगमां उत्तमजनो अत्युत्साह पूर्वक भाग लइ अहोभाग्य माने छे !

दिक्षा-महोत्सवनो छेल्लो दिवस संवत १५४६ ना वैशाख सुद ३ नो हतो, ते दिवसे बहुमूल्य पालखीनी अंदर किशोर वयना पार्श्वचंद्र कुंवर दबदबा सह विराजमान थया अने गाजते वाजते गीत नृत्य संयुक्त पुष्कळ आडंबरथी शहेर बहारना उद्यानमां अशोकवृक्ष आगळ संघ समुदाय साथ जइ पहोंच्या.

गुरुराजे जैननी दिक्षाविधि शरु कर्यो अने क्रमे क्रमे शरीर उपरना वस्त्रालंकारनो त्याग करी वैराग्य पूर्ण महाव्रत उचरावी तेमनुं मुनि पार्श्वचंद्र नाम कायम कर्युं, व्हाला वाचक वर्ग ! ए वखतनो आनंद अने भव्य दबदबा भर्यो मानव-मेदनीनो देखाव, ते वखते हाजर रहेला भाविको अने गुरु नव दिक्षित मुनिना अंतःकरण सिवाय वाह्यनिरतीने कोइ वर्णन न करी शके तेवो असाधारण शोभावंत हतो.

हाजर रहेला भोजको-सेवको-याचको-बिरुदावळी बोलता जनो अने कविओ विगेरेने उदारता साथ दान दक्षिणा आपी. तथा अन्य आनंदप्रद आचारोने आचारमां आणी मनमानती सुकृत्यनी

कमाणीनी ल्हाणी मुनिना संसारिपणाना मातापिताओए, सगां संबंधियोए, अने मेसकोए मास करी पुन्य मकृतिने मबळ करी. ..

गुरुराज पण प्रमोद पाम्या. विजयकारी वासक्षेपवडे दिनप्रतिदिन विजय वावटो फरकवाना मनोबळनुं गुप्त तत्त्व मुनिने समजावी कार्यनी सफळता स्वाधीन थइ मानी भव्य जीवो प्रत्ये गुरुराजे संसारनो असार संबंध दर्शावनार अने मांगलिकमाळा प्रवर्त्तावावना विचारनो धर्मबोध आप्यो.

तदनंतर महोत्सव पूर्वक सकळ समुदाय आनंदमां गर्क थइ पोत पोताना घर भणी परवर्यो. मात्र गुरु-आज्ञाथी नियम योग्य नवदिक्षित पासे दिक्षितो अने श्रावको रात्रभर शहेर ब्हारज रही प्रातःकाळे अपूर्व शोभा भर्या स्हामैया सहित उपाश्रयमां पधार्या अने देव गुरुने मर्यादा प्रमाणे नमन क्षमापनादि करी मुनि पोताना मनमां अहोभाग्य मानवा लाग्या; केमके धारेली धारणा निर्विघ्न पणे सफळ थइ. कार्यनी सफळताएज आनंदनी रेलमछेल मनाय छे.

मुनि पार्श्वचंद्रनी गुरुराजनी साथे भवजलतारक भव्य जहाजरूपथी शत्रुंजय गिरिराजनी यात्रा करवा विचर्या अने त्रिकरण शिद्धिवडे श्रीमरुदेवीना नंदनने निहाळी पाप पखाळी पुनः विधिपूर्वक विहार करता गुरुजी सहित अनुकूळ स्थळे पधार्या.

गुरुजीनी पासेथी पड्शास्त्र संबंधीनी चर्चावादनां शास्त्रो, व्याकरण–काव्य–साहित्य–नाटक–छंद–संगीत–रसालंकार–तर्क–योग–स्वमतमंडन. परमतखंडन संबंधी विविध शास्त्रो, जिनमतनां आगमो श्रुति स्मृतियो, गणित, प्रकरण, पड्दर्शनना तत्त्वदर्शक सिद्धांतो अने अन्य विविध शास्त्रोनो गंभीर रहस्य सहित अभ्यास कर्यो. तेमज फारसी तथा आरबी लिपि, मनहरण विचित्र चित्रकला, तथा अष्टावधानना चातुर्यनो पण सारो अभ्यास मेळव्यो. विशेषमां काव्य–चित्र–प्रबंध, राग रागीणियोनुं ज्ञान, कवितामां पदलालित्यता, अर्थगंभीरता अने अष्टोपता लाववानुं ज्ञान, तथा वैद्यकज्ञान, अने संस्कृत, मागधी भाषानो उच्च अभ्यास इत्यादि इत्यादि विद्या कला उत्तम आचार्यो अने शिक्षको द्वारा प्राप्त करी एक धुरंधर विद्वान शिरोमणि पदने शोभावनारा नीवड्या.

मुनिश्री पार्श्वचंद्रजी विविध ग्रंथ, चरित्र, प्रस्तारिक श्लोक, स्तवन, स्वाध्याय, स्तुति, चोपाइ, रास आदिनी सुंदर रचना रची सरस्वतिमातनुं बिरुद प्राप्त करवामां, मतवादियोना वाद गाळवामां, जनमनरंजन करवामां, भविकने सुबोधवडे धर्मानुरागी बनाववामां, दैवीचमत्कार देखाडवामां अने जिनाज्ञा मुजब आत्मकल्याणनो शोध करी विचारने आचारमां लाववामां पूर्ण प्रयत्न सेवनारा.

श्री पार्श्वचंद्रजी देखावमां मनोहर, वाणिनो सुंदरसुंदर समयोचित विलास, अनुभवी, जनमन आकर्षवानी कुशळ, अने दृष्टिवदनमां

आगळ वधवा अत्युत्साही होवाथी रूप गुण संपन्न हिंदना कोहीनूर समान ज्यां त्यां गुणीजन वृंदमां आदर सत्कार मेळववा विश्वविख्यात मनाया.

नियमज छे के रूप गुण शीळवडे मनुष्य मात्र दरेक जगोए पूज्यपद मेळवीज शके छे! केमके रूप अने गुण मनुष्यनां मन स्वाधीन करवा माटे उत्तमोत्तम वशिकरण छे! रूप ए जोनारने मळवानी आतुरता पेदा करवानुं बीजमंत्र छे! अने गुण ए मेळवेली मुलाकातने सदैव संजीवन करवानो अमृतकुंड छे! रूप गुणने ओळखावनार छे! अने गुण रूपने शोभावनार छे! कदरूपा मनुष्यमां पूर्वकर्मनी पुन्यप्रकृतिनी प्रबळताना संयोगे कदाच उत्तम गुणोनो संग्रह थइ आवे छे; परंतु ज्यां लगी पूरो परिचय न थाय त्यां लगी तेनापर प्यार के पूज्यबुद्धिनो भाव पेदा थइ आवतो ज नथी. पण जो रूपवानमां गुणोनो संचय होय तो दूधमां साकर मळीजवा जेवो संयोग जगानां ते रूप गुण शीळसंपन्न मानव देव, दानव ने कंटक मानवने पण चमत्कार पेदा कर्या वगर रहे नहीं. आम होवाथी श्रीपार्श्वचंद्रजी दरेकना मनमां चमत्कृति उपजाव्या विना रहा नहीं.

जनमनमां चमत्कारनी झगझगाटी प्रकटनां श्रीपार्श्वचंद्रजी अति विशेष उचतर दशाना भोक्ता थाय एवा आंदोलन पूर्वक सघन वातावरण भूमंडलमां पळवळ थतुं चाल्युं अने ते वातावरणे गुरु साधुरत्नसूरीजीना मनमंदिरनां अंदर पहोंची सदाने माटे स्थान

कायम कर्युं. आम थवाने लीधे गुजरातनी हमिषो उपर जे आंदोलन-जोर ए काबू मेळव्यो छे, श्री पार्श्वचंद्रगणिने हवे उपाध्याय पदथी अलंकृत करवानी आवश्यकता छे, पछी अमुक विचारणाने उद्भववाथी ते कायम रहे तेवी योजना योजवामां फतेह पामी.

शिष्य अगर गुरु योग्यतावाळा शुभ के शिष्यने जो योग्य अधिकारनो अधिकारी न बनावे तो तेमनो घनिष्ट संबंध अने मिष्ट-तावाळो व्यवहार कदि पण शोभावंत नीवडी शकतो नथी !

संवत १५८६ थी १५९४ सुधीना आठ वर्षना टुंक अरसामां शिष्यरत्न श्री पार्श्वचंद्रगणिए अनहद विद्या कळानी अंदर मेळवेली फतेह, तेमज जनसमाजनो प्राप्त करेलो अंतरंग धर्मस्नेह अने विश्वमां विस्तारेली विमळ विख्याति ए विभूती मायाए गुरुवर्य नागपुरीय तपगच्छाचार्य साधुरत्नसूरीश्वरजीने अत्यंत आनंद आप्यो हतो अने तेमां पण जगो जगोएथी संघ तरफनां पादकरद आग्रहवाळां वीनती पत्रो आव्यां, पछी नागोर शेहेरनी अंदर सकळ संघने आनंदी उर्मियोनो जाण थयो.

नागोर नगरमां नगीनारूप धनधान्यादि संपत्ति पूर्ण, दृढधर्मानुरागी, ब्रह्मचर्यधारक, सदगुणि अने देव गुरु धर्मधारणोनुं शिक्षण वृद्धिवडे मेळवनार शेठ सरजाणी गोत्रीय सदयवंद वगेरे आगमज्ञ भाविक भक्तोए पाठकपदोत्सव शरु कर्यो अने घणाए गामोना श्री संघसमुदायने ते शुभ अवसरपर नागोर पधारवानी

पाठकपदोत्सवमां भाग लेवा आवेलो संघसमुदाय पूज्य श्रीपार्श्वचंद्रजीनी पदवी—ख्याति—उन्नतिमां विशेष वधारो थतां अत्यंत आनंदमग्न थइ गयो हतो, एटलुंज नहीं पण पाठकपदोत्सवनी पूर्णाहुती थया छतां पोतपोताने घेर जवानुं पण तेने अनगमतुं भरेलुं लागतुं हतुं; परंतु न छूटके गुरुदेवनां चरण वंदी निज निज स्थानके जवा विदा थयो. अहा ! एज संघसमुदाय धन्यातिधन्य मनाय छे के जे देवगुर्वादिनी शुद्ध भक्तिना आनंदमां तल्लीन बनी रही व्यवहारिक कार्योनुं पण भान भूली जेसे छे ! शासनदेव ! एवा संघसमुदायनी सदा चढ़ती करो अने तेवा आनंदीकल्याणी संघगणनां मङ्गल विघ्न हरो ! अस्तु ! ! !

तदनंतर पाठकजी श्रीपार्श्वचंद्रजी देश विदेशमां विहार करता तथा विविध ज्ञानतत्त्व संशोधन करता अने नवरसादिथी संघमधनने शोभावता वागडोट मेवाड वगेरे मंडलोना भव्यजीवोने प्रतिबोध आपी तेओए तेमनां हृदयक्षेत्र अने पृथ्वीक्षेत्र ए बन्नेने पावन कर्यां. पाठक श्रीपार्श्वचंद्रजीमां वाणीविलासनो अनुपम गुण हतो के जेणे एक वार मधुरवाणीनी देशना के वातचीत सांभळी के गमे ते ज्ञानीनो अने गमे तेवा कंटक मननो होय तथापि ते गुरुगुणानुरागी थयेल हतो. आम होवाथी केटलाक राजाओ, असुरो अने हिंसकोने पण धर्मरंग लगाडी अहिंसाप्रचारक कर्या. तेमज मनीति मळे छे के बावन वीरने अने चोसठ योगिणीने पण स्वधर्मप्रदायक हृत्तिनो·

रंग पेदा कर्यो हतो. महत् पुरुषो देवोने पण हाथ करी ले तो एमां कंइ आश्चर्य थवा जेवुं नथी; केमके जेओ असत्यथी अलग, अडग ब्रह्मचर्यधारी, सर्व जीवोने अभयदान देनार, शत्रुमित्रने समदृष्टिथी जोनार, रत्नत्रयीना उपासक, लालच-क्रोध-मान-मायाथी रहित, गूढ ज्ञानतत्त्वनी गरिमाना ज्ञाता अने निरंतर उत्क्रमनेज हाथ करनारी जप तप आदि क्रियाओना उपासी होय तेवा ज्ञानी ध्यानी तपीना देवो दास थइने रहे एमां नवाइज शी?

प्रभावशालि पूज्य पाठकजी जिनाज्ञानुसार विहार करता, तथा शिष्यसंततीने यथारता अने जैनागमो-सिद्धांतो-सूत्रो-पंचांगी वगेरे पुष्कळ ग्रंथोना गहनभावने ध्यानमां लइ अनुभवता भव्य सुवर्ण सादृश भारत भूमीने पावन करवा लाग्या; परंतु ते समयमां जैनयति-साधुमंडळमां चाली रहेलो शिथिलाचार निहाळी अर्थात् जिनमन्दिरक्रियाकांड ज्ञान ध्यान उपर विशेष ख्याल नहीं आपता जोइने भवि जीवोना हित माटे शुद्ध क्रियाकांड भर्यो मुनिमार्ग चलाववा, तेमज श्रावक श्राविकाओने शुद्ध क्रिया बताववा क्रियाउद्धार करवानी उपाध्यायश्रीजीने इच्छा उत्पन्न थइ अने गुरुराज प्रत्ये ए संबंधे वीनती करी उपाध्यायजीए पूछयुं के "प्रवरपंडित पूज्यवर्य ! आपश्री जिनवरजीना कथन प्रमाणेज शुद्ध क्रियामार्ग जोहरमां लावोछो; परंतु ते प्रमाणे हालमां शुद्ध क्रियाकांड अमलमां केम आवतो नथी ? "

गुरुराजे कह्युं–"केटलाक मतवर्गो बाह्याचारे जगत्नुं आचा-
मोने शरुआत करवाथी धीरे धीरे गीतमवासीओ पोताना क्रियाकांडमां
शिथिलपणे थता जाय छे. परभावगतवादी पदवंदोना विगेर
पहिरवाने जोरे क्रियानुष्ठान करी पर गुरुआम्नाय गवेषी मतवर्गीओ
पोतानो मत्सरिरव विभर्ग विस्तारवामां मन दृढ रहेला छे. नाग-
पुरीय हरत्वगच्छाधिराज श्रीमज्जैनगच्छसूरीश्वर शिवंकराने
मतिवोधी मतवर्दनो विजय वावटो फरकाव्यो हतो.

एटलेके गुर्वाश्रय सज्जनलोकोना अंतःकरणनी अंदर सहेवा
लायक गभवरनारीनी इर्षा खाय वेमाटवा कह्युं–" पाटलाहिने,
हिच्चे मान्यम्! (जगतजनोने पवित्र थवा तीर्थरूप) उद्धारनाद
(जगतजनोनुं रक्षण करनार) गुर्वारिट! अने हमेश पववरंगार
वगेरे महान इन्द्रावो (पर्हीओ) आववामां आवे छे ते इन्द्रावो
न्यायथी भर्या छे. ध्यानवीरने वधारे कहेवाय छे. ज्यारे ते पोताने
महेल पड्लो यथार्थ धर्म धनावे त्यारे !

बादशाहोनो धर्म एज छे के–पूर्ण इन्साफथी अमल चलावी रैयतने
जोटले तेनुं सुख आपवुं. जेम बने तेम मारी मारनी ममता मेळववी.
सारां कामो करी उत्तम नामना मेळववी. धर्म उपर श्रद्धा, कर्तव्य
सावधानता, खबरदारी. दीर्घदृष्टि मळेली तकनो पूरतो लाभ लेवो,
उदार्य, धैर्य, क्षमा, वचनपालकपणुं, सत्संग अने विवेक आदि

સદ્ગુણો દૃઢપણે ધારવા અને તેઓને પૂર્ણપણે અમલમાં આણી અન્યને ધડો લેવા યોગ્ય વર્ત્તન શીખવવું.

ઇન્સાફ એનું નામ છે કે–લોકોમાં સમાનતા જાળવી રાખવી મારૂં તારૂં ન ગણતાં એક રાહે રહી અદલ ન્યાય આપવો, દરેક વર્ગની તેનો પાયરી પ્રમાણે નિગાહવાની રાખવી, જેમનાપર જુલ્મ થયો હોય તેમને દાદ આપવી, અને અહેસાનરૂપ (જુલ્મીઓના જખમપર રાહતરૂપી) મલમ લગાડવો.

માલિકની બંદગી કરતાં ઇન્સાફનુંફળ સાઠગણું વધારે છે. કેમકે બંદગીનું ફળ તો બંદગી કરનારાનેજ મળે છે અને ઇન્સાફનું ફળ તો આખી રૈયત વગેરે સર્વને મળે છે. અદલ ઇન્સાફનો મારો બદલો બેહદ મળે છે. સાઠ વખત હજ્જ કર્યાનુંફળ ઘેર બેઠે મેળવવું હોય તો જેઓનાપર ગેરઇન્સાફ થયો હોય તેઓને ઇન્સાફ આપવાથી તથા તેવા ગરીબોને દાદ આપવામાં જે કલ્યાણ નીકળે તેથી હાથ થાય છે. હઝરત મહંમદ સાહેબે પણ કુરાને શરીફમાં ફરમાવેલ છે કે, મુલતાનોને માટે એજ યોગ્ય કામનો બોજો છે કે,–માણસોને ઇન્સાફ આપવામાં મશગુલ રહેવું તથા ન્યાયપૂર્ણ જીંદગી ભોગવવી અને રૈયત ઉપર ન્યાયથી રક્ષણ કરવાની નજરથી જોવું એનાથી બીજું કંઇ વિશેષ તેમને લાયક નથી. ન્યાયવડે આખું વિશ્વ નિર્ભય થાય છે. ન્યાયની મોટાઈથી આખી દુનિયાં સુગંધિત બને છે, અને ન્યાયથી વર્ત્તતાં તમામ મુરાદો બર આવે છે. ન્યાયી

जनने मदद चहाय छे, अने जुल्मीने दरेक जण धिक्कारे छे. इन्सा-
फथी मुल्क मजबूत थाय छे. तथा ज्यांलगी पादशाहना पण इन्सा-
फनी मजबूतीसर होय त्यांसुधी तेना विरुद्ध तोफानो नाश
कायम रहे छे. त्यांनी रयत ए मखलूकनी दयाळुतिनी छायातळ छे.
तेनामां न्याय छे तेम दयानी मूर्तिरूप मनाय छे. माटे त्यांनी मुल्क-
वाने पोताना छांयडानेज आशरो करीने रहेवानी जगा आपवी के
जेथी मरजी मोटाइ सन्मानसर आदर मेळवी शके छे.

निच तथा प्रभुने समान मानी ने वेठ जोडे मायाळुपणाथी
वर्तवुं, रैयतपर रहेमनजर राखवी, दरेक काम विचिक्षण पुरुषनी
सलाह लइ करवुं ए पण इन्साफ बुद्धिमान मनाय छे. इन्साफ आ
दुनियां अने पेली दुनियामां मान अने सुख आपे छे. वैद्य अने
पादशाह स्वभावमां सरखा होवा जोइये एटले के वैद्य, जेम दर-
दीनी पूंछपरछ हकीकत सांभळी ध्यानमां लइ तेनुं दर्द दूर थवा उत्तम
इलाज आदरे छे, तेम पादशाहे दाद मांगवा आवनारनी वात तमाम
सांभळी ध्यान आपी तेनां दुःख दूर करवा योग्य रस्तो हाथ
धरवो. ते रोगी के दादखाह वधारे बोल बोल करे तोपण तेथी
वैद्य के पादशाहे कंटाळवुं नहीं, तेनापर गुस्सो लाववो नहीं, अने
तेने मधुरताथी दिलासो आपी तुरत तेनुं दुःख निवारण करवा
जोइये. पादशाहोना माथे एज फरज छे के दरियादीली अगर
ध्यान दइ सांभळी, तेनाथी मखलुक साथ ममताथी वात करवी

अने गरीब जोडे वात करवाथी शरमावुं नहीं. पोताथी उतरती पंक्तिना माणसो साथे ममताथी वात करवी ए महानपुरुषोनो सद्गुण गणाय छे. गरीबोपर नेकनजर राखवाथी मोटाइ वधे छे. दुःखी जननुं दुःख दूर करवुं, नासीपास थता होय तेमनी इच्छा पार पाडवी. रैयतना कामकाज भणी चोख्खुं मन राखवुं, तथा तेमनुं भलुं करवानोज निरंतर इरादो राखवो; केमके पादशाहोनी सारी इच्छा एज पोताना राज्यनी बरकत वधवानुं चिन्ह छे. खेती के बगीचामां रसकसनुं वधवुं घटवुं, अन्न वधारे थवुं के कमती थवुं, वरसाद आववो के न आववो अगर बरोबर न वरसवो, काळ पडवो के सुकाळ थवो अने रोग वधवो के शांति रहेवी—एओनी हानी वृद्धिनो आधार राज्यकर्त्ताओनी रैयतपर रहेती सारी नठारी विचारणा उपरज छे. माटेज न्यायीपणुं ए सर्व सद्गुणोमां सर्वोत्कृष्ट छे. राजानी हमेशगी, मुल्कनो विस्तार, खजानानी भरपूरता, अने शहेर तथा कस्बाओनी आबादी पण न्यायथीज आबादपणुं भोगवे छे.

जुल्म ए अधममां अधम दुर्गुण छे, जुल्म पडतीनो पायो छे, जुल्म जालिम तीर करतां पण वधारे अंतर छेदनार छे, जुल्म ए कातेल झेर छे, जुल्मपणुं मोटी खोट आपनार व्यापार छे, जुल्म एज बेड दुनियाने खराब करनार छे, जुल्म सद्भाग्यना दरवाजा बंध करनार छे, जुल्म ए संपत्तिनो नाश करनार छे, अने जुल्म ए

दयाली दौलतनी पायमाली करनार छे. बादशाहो और जुल्मथी कोइनो माल गुंचावी ले छे के कर वेरा नाखी कोठार भरे छे ते बादशाहो दीवालोनो पायो खोदी अगाशीने धोळवा जेवुं करे छे.

रैयत मूळ अने सुलतान वृक्ष छे. ज्यारे वृक्षनुं मूळ नबळुं पडे त्यारे वृक्ष पवनना पहेला सपाटेज जमीनदोस्त थाय छे. एज रीते जुल्म करनार पोतानांज मूळ खोदनार बनाय छे. माटे जुल्मगारोने शोधी शोधी दूर करवा अने इन्साफवडे सर्वनी दुवा मेळववी.

बादशाहोनी बीजी फरज ए छे के-सर्व प्राणीपर दयाभाव अने रहेम नजर राखवी केमके कुदरते शायनकोनी प्रजा ए एक अनामत सोंपेली छे तेने जाळवी राखवीज योग्य छे. ए अनामतना अंग तेमने निश्चिंत राखो, तेमनी स्थिति सुधारवी, अधीरा बनेला-ओने दिलासो आपवो; दयाशील बनाववो, जुल्मी पुरुषोना हुमलानी बलामांथी छोडवी बेफिकर राखवी, अने वारंवार तेमनी संभाळ लेवानी काळजी राखी तेमना सुखना उपायो शोधवा.

जो आपणे बीजापर दया राखीशुं तो तेओ पण रहेमनीज नजर राखशे.

जे दयानो झुंडो उठावे छे ते पोतानुं अने बीजाओनुं काम फतेह करे छे अने जे दयाने लीधे श्रेष्ठ थयेल छे तेनापर नशीबनी नजर मीठी थाय छे. आ दुनियानी सलामतीनो दयावृत्तिपरज आधार छे; माटे रैयतनी संभाळ राखवानुं कदी चूकवुं नहीं. हृदय

पीडित जनोपर कृपा राखी वर्त्तवुं. वापवेटाना जेवो नातो राजा मजा वच्चेनो छे जेथी ते प्रमाणेज घनिष्ट संबंध राखवो. आपणे रहामाने क्षमा बक्षीशुं तो ते पण तेमज करशे, अने क्षमाथीज अदृश्यनुं बारणुं उघडशे.

पादशाहोने ए शिकार करवो योग्य छे के रैयतना मननो शिकार करी तेमनां मन पोताने तावे लेवां. रैयतनां दिल पादशाहनी आबादी भणी कायम थयां के वीजी बधी वस्तुओ तेनी पाछळज घमडाइ पोताने तावे थाय छे. राजमहेलनो पायो मजबुत करवो होय तो रैयतनी पुर्ण ममता मेळवी ते केलवडे दृढता आपवी. रैयतनो प्रेम एज राज्यसत्ता जाळवानारुं जबरदस्त लश्कर छे. रैयतने जोइतां साधनो पूरां पाडवा माटे घटती योजना योजवी. तेमने पडती तकलीफो दूर करवा पुरतुं ध्यान देवुं, लांचीआ, तोफानी, जुल्मी, वंडखोर, लुंटाराओ, चुगलीखोरो, जुठाओ वगेरेनां प्रपंचतंत्र वंध पाडवां.

मुल्कनी आबादी करवी होय तो रैयतनी आबादी जाळववी. पोताना खजाना करतां रैयतने वधारे कीमती खजानो मानवो, अने ते खजानो संभाळी राखवो; केमके खजानो कदी पण खूटी जशे, परंतु रैयतरूप खजानो मत्येक पळे नवुं नवुं धन उपजतां वारां खोली पूरुं पाडशे.

रैयतनी मुलाकात लेवा मुद्दा दरवाजे भरवा, तेने बोलवानी छूट आपवी, तेना पर पडती आफतोनी, लांचीआ जुल्मी अमलदारोथी

थता जुल्मनी दाद मेळववा खबर वात सांभळी दिलासा भर्यो जवाब आपवो, दरबारनो कोई दाद मेळवनारने न रोकी शके तेवो सख्त बंदोबस्त राखवो, अने दरेक कचेरी दफतर वगेरे तरफ घणी बारीक नजर राखी सर्वनी उपर योग्य दाब राखवो.

जे पोताना उपर जवाबदारी छे ते बीजाने हाथ सोंपी निश्चिंतपणे एशआराममां पडवुं नहीं. जे शहेनशाह पोते जागतो रहे छे तेनी प्रजा निरांते उंघवा पामे छे, अने जे उंघमां मशगुल रहे छे तेनी प्रजा उजागरा वेठे छे; केमके तेवा राज्यकर्ताओना राज्यमां चोर जुल्मगार, लांचीआ वगेरेनुं जोर वधी पडी अंधेरनो अमल छवाइ रहे छे एटले पछी रैयत क्यांथी सुखे सुवा पामे ?

हकुमतना तख्त उपर बेसवुं सेहलुं नथी; केमके ते जगानो अधिकारी थया पछी सेंकडो प्रकारनी सावधानीओ राखी वर्तवुं पडे छे. दुःखी गरीबजननी फरीयादो पर ध्यान आपवुं पडे छे, निर्बळजनोपर रहेम राखवी पडे छे, अने आमजननी जोखमदारी जवाबदारीओ जाळवी पोताना तथा प्रजाना हको अदा करवा पडे छे; कारण के न्यायना तख्तपर बेसी सत्य न्याय हाथ धरवो पडे छे.

सारां कामो करवा माटे पादशाहोनी ए फरज छे के– मदरसाओ खोलवी, बेगुनेगार जानदारोना जान बचाववा, मुंगा प्राणीओपर गुजरतुं पातकीपणुं अटकाववुं, देवळ, मसजिदो, धर्म-

चाळाओ वगेरेनी सारवार रहेवानी बंदोबस्ती राखवी, कळाशाळाओ खोलवी, निशाळो मारफत विद्यानी वृद्धि करावी प्रजाने सारासार समजती बनाववी, निमाज पढवी, धर्मना कामोमां मदद आपवी, धर्मांधपणुं छोडवुं, नगरचर्चा जोवी, प्रमाणीक जासूसो मारफत प्रजाने पडता सुखदुःखना समाचार मेळववा, धर्ममां चुस्त रहे तेवी फरमियात धर्मनी तालीम आपवा तदबीर योजवी, अने पोते जाते दया, रहेम, न्याय वगेरेमां वर्ती तेनी सचोट असर प्रजामां फेलाववी.

तेमज धर्म उपर दृढ श्रद्धा राखी वर्तवुं, प्रत्येक कर्तव्यमां सावध रहेवुं, मुस्त न रहेतां ताकीदे पोताना राज्यधर्ममां तत्पर रहेवुं, दीर्घदृष्टि वापरवी, अने ज्यां जे गुण के फरजनी जरुर होय त्यां तेनो पूरतो उपयोग करवो.

बादशाहाओए प्रतिज्ञाभंग थवुं नहीं, विक्रममां खामी आववा देवी नहीं, सतसंगनो रंग लगावी सदाचारी थवुं, अने आ दुनियांनी मुसाफरी पूरी करी पेली दुनियांमां गया पछी पण सारको लेखको, ग्रंथकारो अने दुनियां यादीमां राखी जयवाद वदे तेवां कार्यो करवां एज इन्सान्नी जींदगीनो सार छे." इत्यादि इत्यादि उपदेशथी फिरोजशाह तघलखे सारा बादशाह तरीके नीवडवानी पदवी ग्रहण करी अने ते पदवी वडे वाहवाह थइ जवा ते सूरीरा-

अनी बहु मान्यता वधारी तेमज खुद पोते आधीन रही तेमनो मरतबो अधिकतर वधार्यो.

बादशाहनुं बहु मान मळ्यां छतां पण ते सूरीजना अमलमां मुनिमंडळ उग्रविहारीपणामांज कायम रह्युं, तत्पश्चात् तेमने पाटे श्री हेमचंद्राचार्यजी थया ते पण महान् प्रभाविक हता; तथापि शहेनशाहना बहुमानना लीधे सहज क्रियानुष्ठानमां ढीला थता गया, अने तेमने पाटे हेमरत्नसूरीजी थया ते पण यवनाधीशना सन्मान युक्त हता जेथी मर्हूम गच्छपतिना समयथी शिथिलाचारनुं रोपायलुं बीज अंकुर रूपथी पांदडादार थयुं जणायुं. एथी विशेषपणे आचारमां ढीला थया. ए कारणने लीधे-यथाराजा तथा प्रजा-न्यायानुसार पोतानो परिवार पण शिथिलाचारी थतो गयो, अने अत्यारलगण तेनोज चेप लागु रहेवाथी दिनप्रतिदिन शिथिलाचारमां उमेरो थतो रहेल छे. आम होवाथी घर करी बेठेलो शिथिलाचार दूर थवो ए अति कठीन छे. माटे समपरिणामवडे धर्मसाधना करी स्वात्मकल्याण करवुंज श्रेष्ट छे."

गुरुराजना मुखारविंदथी आवी हकीकत जाणी उपाध्यायजीने अतीव उत्कंठा थइ आवीके 'उत्कृष्ट वैराग्यधारक थइ शिथिलाचार दूर थवा उद्यमी थवुंज योग्य छे.' एथी गुरुमहाराजने विनयपूर्वक वीनव्युं के-"जैनधर्मोन्नतिना अर्थे हुं क्रियाउद्धार करवानी अपेक्षा

निग्रंथ—त्यागी थया पछी मुनि महाराज श्रीपार्श्वचंद्रजी नव कल्पी विहार करता तथा पंच सुमतिगुपता अने त्रण गुप्तिगुप्ता युक्त मुनिमार्ग मुजब यावित परिसह सहन करता अप्रतिबद्धपणे विचरता भवि जीवोने प्रतिबोध आपी शिथिलाचारने दूर करवा लाग्या.

नागोरथी विचरता जोधपुर समीप आवी पहोंच्या अने ते वातनी श्री संघने जाण थतां अति आडंबर पूर्वक निग्रंथ गुरुने वीनतो करी शहेरमां पधराव्या केमके गुरुराजना उपदेश विना कदि पण कोइनो उद्धार थइ शकतो नथी.

गुरुराजनी मधुरी शुद्ध वाणिनी प्रशंसा शहेरमां विस्तरी अने ते कुंवरथी माल्देवर्जीना कान लगी जइ पहोंची जेथी श्रीसंघने सूचना अपावी पोते पण व्याख्यान श्रवण करवा उपाश्रयनी अंदर पधार्या अने विनयपूर्वक गुरु वंदन करी ते धर्मदेशना सांभळवा विराज्या.

वांचनार ! दरेक काम सिद्ध करवानी जो साची इच्छा होय तो ते समयनी अनुकूळतान छे. समयनी अनुकूळता मळतां पछी विलंबने आदर आपवो नहीं; केमके तकने आगळ वाळ छे, पण पाछळ टाल छे जेथी आवती तक पकडी लीधी तो बेडो पार थाय छे. जो आवेली तक जवा दइ पाछळथी तेने हाथ करवा जइये तो

ते पछी टाळना लीधे पकडवानुं साधन हाथ न लागवाथी छेक छटकीज जाय छे. जे घडी चाले छे तेनापर आपणो हक छे, पण आवनारी तक उपर आपणो हक नथी; केमके ते तक आपणी थशे एवो फंड आ क्षणभंगुर संसारनी बाजीनो भरोंसो नथी, माटे हाथ आवेला समयने काबुमां राखी तेनो उपयोग करी लइ कार्यसिद्धिनुं रहस्य मेळववुं एज सर्वोत्तम डहापण छे.

सूरीश्वरजी अवसरना जाण होवाथी पाटवी कुमारश्रीना अंतरमां सद्नंतर राज्यनीतिनी उंडी लागणीवाळी छाप कायम रहे तेवो उपदेश देवो शरु करी फरमाव्युं के-"आ संसारनी अंदर सार रुप मानव जन्म मेळवी एज वस्तु संपादन करवानी जरुर छे के सद्धर्मने ओळखी, तेनां तत्त्वो सद्दही पाळी उत्तम जन्मने धन्यातिधन्य करवो. बांधी मुठीए आवी खाली हाथे आ फानी दुनीयांनी सरायमांथी कूच करवुं ए तद्दन गेरव्याजबी छे. आवती वखते खर्ची लावेली ते खर्चाइ जतां फरी नवी पुन्य-खर्ची मेळवबी अने ते पछी मुसाफरीने लंबाववी एज बहेतर नियम छे.

आवो मानवधर्म छे तथापि ते मानवोने धर्ममां कायम करवा के कायम रहेवा देवा ए राजाओनाज हाथमां छे. कोइपण कोम पोताना उत्तम धर्मथी भ्रष्ट थवी राजानी जाणमां आवे तो तेने योग्य समजुत आपवामां आवे, छतां पण तेथी स्वधर्मनी दरकार न राखे तो तेने कायदाना फरमान मुजब सजाने पात्र करी जाग्रवी

बतावे. केमके कायदो पण मानवोने सारी नीति रीति शीखवा प्रवर्तवानो, अनीतिथी अलग थवानो, धर्म कर्ममां सावध रहेवानो अने व्यवहार आदि बाबतोने मान आपवानो मार्ग बतावनार छे. एटलुंज नहीं पण ते कायदानाज भयथी इलायदा मार्ग न आदरतां कायदा वगर अंकुशवडे सारो उत्तम फायदो उठावे छे अने तेथी मानव मान्यवंत मनाय छे. अंग्रेजी आगेवानवाळा राज्यमां पण कायदा तो होय छे; परंतु ते नालायक वंचाणना होवाथी कदर विना काममां आवे छे.

मरवाडना हाथमां पारसमणि आववाथी बकरीना कोटमां लटकावे छे, मूर्खने हाथ चिंतामणि रत्न आववाथी कागडो उडाडवामां तेनो उपयोग करे छे, भीलडीने हाथ हीरो जवाथी तेने चणोठीना हारमां जगा आपे छे, अने गमार व्यापारीने हाथ कोहीनूर चढवाथी तेने प्रसंग वगर काममां लेउ. वस्तुनी कींमत कींमतदारना हाथेज थइ शके छे. कहुं छे के—

(इंद्रविजय छंद.)

उत्तम छे पण स्या उपयोगनि आरसी अंध अगाडि करोने ?
उत्तम छे पण स्या उपयोगनि सुंदरि षंढ अगाडि करोने ?
उत्तम छे पण स्या उपयोगनि मूर्ख अगाडि सुबोधि करोने ?
उत्तम छे पण स्या उपयोगनि बीन बधीर अगाडि करोने !

कहेवानो भावार्थ एज के उत्तम कायदा छतां अन्यायि राजना अगाडी ते श्या उपयोगनो गणाय ? शस्त्र शूरवीरना हाथमां, माला संत पुरुषना हाथमां, ताजुदी वाणिज्यकारना हाथमां, अने कंकण सुंदर सुंदरिना हाथमांज शोभा आपे छे.

(इंद्रविजय छंद.)

भामिनिनुं वरभूषण एज सदाय सुशीलवडे सुख आपे,
भूपतिनुं वरभूषण एज हितावह न्याय सदा स्थिर स्थापे;
श्रीपतिनुं वरभूषण एज हमेश दुखीजननां दुःख कापे,
विप्रनिनुं वरभूषण एज अधर्म अनीति अलीक उथापे ॥१॥

प्रिय युवराजपदाधिकारी ! उत्तम राज्यकर्तानां एज सुचिन्हो छे केः–

(गाथा)

दुष्टदमनम सत्पालन–माश्रितभरणंच राजचिन्हानि;
अभिषेकपट्टबंधौ वालव्यजनं व्रणस्यापि ॥ २

एटले के दुर्ष्ट–लोकानां–अन्यायी–अधम जनोने सतावनावश करवा–शिक्षाने पात्र करवा, तथा पंडित कलाधारी जनोने आदर आपी तेमनुं पालनपोषण करवुं अने आश्रितजनोना निर्वाह निमित्त उत्तम संस्थाओ खोलवी. आ त्रण राजचिन्ह छे. नहीं के

राज्याभिषेक, राजपट्ट अने चामर वींझावां ए त्रण राजचिन्ह छे. जो ए त्रण चिन्होथी राजा थयेला मनाय तेम होय तो सुंवर, चांडाळ के थाने पण ए त्रणे चिन्ह मोजूद होय छे. परन्तु ते त्रण उपर पाणीनो अभिषेक थाय छे, पाटो पण बंधाय छे अने माखीओ उडाडवा चमरी पण विंझाय छे. तो शुं तेने राजचिन्हधारी ए कहेवुं ? स्पष्टार्थ एज के जो ए त्रण चिन्ह युक्त राजा थई मुखवादी न निवडयो तो ते दुःखदायी सुंवरडा जेवाज राजाओ योग्य छे केमके ते ते चिन्होमां सरखापणुंज घटित छे.

बीजुं राजचिन्ह ए छे के. कहेली प्रतिज्ञा पूर्णपणे पाळवी कह्युं छे के–

(छप्पय छंद.)

वचनपाळ ते राय बाकी छे रांडीरांडो,
वचनपाळ ते राय बाकी छे गधवरगांडो,
वचनपाळ ते राय बाकी छे पंढ सरीखा,
वचनपाळ ते राय बाकी छे कांटा तीखा,
वचन न पाळे जे कदि तेने नरपति नव गणो,
मूढ समानज जाणजो ए सहुने अकळावणो. १

तेमज राजामां एवी नीति होवीज जोइए के जे, धर्मात्मा, प्रजापालनमां तत्पर, दुःखीओनुं पालनकरनारो, मेघनी पेठे जीवनदाता,

पाणी पानो एवो माळीनी पेठे प्रयोगकुशळ राजा होवोज जोइए, अने मारा पासवानोथी, उत्तम सलाहकारोथी, पूर्णभक्त अने वीर अंगरक्षकोथी, आज्ञाशील राणीओथी, नागर गुरुओथी, हितकारी ब्राह्मणोथी, अने विवेकशील नोकर चाकरोथी संपन्न (राजा) होय तो अवश्य संसार स्वर्गनी स्पर्धा करनार मालूम पडे छे. माटे एवा गुणवाळा राजाओ पृथ्वीने धर्म–नीति–धन–धान्य–पुत्र अने सौभाग्य वनावे छे.

राजाओनो जे धर्म तेज प्रजानो धर्म होय छे–एटले के जो राजा धर्माधिकारी होय तो प्रजा पण धर्माधिकारिणीज होय छे. अने जो राजा अधर्मात्मा होय तो प्रजा धर्मानुरागी होवा छतां पण जोर जुल्मनी सतावणीथी के देखादेखीथी अधर्मात्माज बनती जणाय छे. एथीज "यथा राजा तथा प्रजा" आ पराकाकर स्पष्ट सूचवी रहेल छे के जेवो राजा तेवीज प्रजा होय छे.

कहेवानुं तात्पर्य एज के राजाए एवा सद्गुणी गुरु राजचिन्होने दीपावी, तथा मानवोए मानवधर्म अंगीकार करी जन्मने शोभावी पोतानी पछाडी कारकीर्दी दिगंत सुधी अक्षरमां लखावी इतिहासपत्रमां सुवर्णाक्षर संयुक्त स्थापी एवा अवश्य यत्न आदरवा ज योग्य छे के जेथी उभय जन्म सफळताने वरे छे, पाप ताप मेटे छे अने दुःख दोहग दुर्गति छेटे भागी जाय छे." इत्यादि इत्यादि उत्तमोत्तम रहस्यगम्य वाणी श्रवण करावी.

वसी अमो पामर प्राणियोने ते व्यापारनो लाभ आपी सुदशावंत करो ! हे दयालु नाथ ! अनाथनो हाथ पकडी सनाथ करी भव पाथथी पार थवा साथ मंगावी थाओ !

कृपालु ! आ संघ पण इच्छेछे के–' तुं अनुभव रस देवा समरथ, हुं पण अर्थी तेनो; चित्त वित्तने पात्र संयोगे, अजर रयो हवे केनो ! प्रभुनी महेर करीने आज काज अमारां सारो ! '

आ प्रमाणे श्रीसंघनी विनती श्रवण करी निग्रंथ पाठकश्री त्यांज चातुर्मास करवानो निश्चय करी धर्मव्याख्याननी दशनिना उपाय हाथ धरवामां दीर्घदर्शि थया. तथा पर्युषणा पर्व आदि उत्तमोत्तम दिवसोनी अंदर समयोचित जिनवाणीसुधाथी श्रीसंघनां शरीर अने मन नवपल्लव करी अपूर्व सुदशानां भोक्ता बनाव्यां.

जो व्याधिनी व्यथा बीनाइनी होय, तो ते समय अमूल्य औषधनो उपयोग करवानी आवश्यकताज छे; पण ते दर्द दूर थये दवानी जरूर रहेती नथी. जो कष्ट पडे तो तुरत सहायकनी सहायता लेवानी होय छे; पण कष्टनुं कामल नीकली गया पछी ते सहायकनी सहायता मागवी ते केवल अविनयवाळी रीति मनाय छे. यवनत्व के कंइ कारणने लीधे मर्यादाने मान साथे सहेज पलटन मार्गे जापवा समर्थ पूर्वाचार्योने फरज पडी होय ते समयना कारणनी समाप्ति थतां पुनः ते मर्यादाने असल स्वरूपे अचल करवीज योग्य

स्त्रीओनी इच्छा मुजबना पदार्थोज हिय मागे छे. व्यापारिक रीति छे–

> वणिजाः धनमिच्छन्ति, शांतिमिच्छन्ति सज्जनाः
> अधमा धनमिच्छन्ति, मानमिच्छन्ति पंडिताः !

माखीने अनेक मिष्ट पदार्थो हाजर होय, छतां जो जखम वगेरे घांठां घाठीनुं दर्शन थाय तो तेनाज ध्यानथी विशेषतामांज पण आनंद पडे छे. भाग्य पुण्य सज्जनोनो ओर हाजर रहेल होय छतां तेओ निंदक चांडिनीज वार्ता हाथ धरवा उत्कट इच्छा धरावे छे. भवजननो हमेशां पोताना गुणगान पोतन ओशाक वगेरे हाजर होय छतां–'पोताने मारी कोईने पाली. स्वार्थ साधवो नहीं; नीतिनिपुणनी कारीगरीमां, पाछळ मारू ने हंस्वां ' एम सिद्धांतने कंठमणि गणि रहे छे. पंडितोने सरस्वतिनी मर्यादनुं मान हाजरज होय छे; तथापि जनसमुदायनुं सन्मान मेळववानी इच्छाने ओळखाण करे छे ए पोताना मनना विचारोनीज महिमा छे ! कमळाना रोगीने अंतरमां रहेला विकारनी मददद्वारे जगतभरनी वस्तु मात्र पीळा रंगनीज भासे अने धंतुराना मदवाळा माणसने अंतरमां रहेल केफी व्यासिपणाना लीधे सर्वत्र सुवर्णनो भ्रम थाय छे. पोतानाज विचारनी मदद छे !

भाव्यो अने अत्यंत आडंबर, आनंद तथा भाव सहित १९६५ ना र्षमां पंचांग शुद्धि सर्वो उत्तमोत्तम मुहूर्त समय पवित्र स्थळ उपर सूरिपदनो विधि अनुसर्यो. चतुर्विध संघमां आनंद आनंद वर्त्तायो जय जय शब्द ध्वनियी गगन गाजी रह्युं. भेसकोना हैयामांथी हर्ष उभराइ जतो दृष्टिगोचर थवा लाग्यो. अने शनिशशिरूप नवामाओ आ आनंदवृष्टियी शुष्कदशाने भेटता जणाया.

तत्पश्चात् छत्रीश गुणधारक श्रीनागपुरीय बृहद् तपगच्छपति भट्टारक सद्गुरु श्रीयुत पार्श्वचंद्रसूरीजी विजयवंत थइ वादीरूप भंथ जनोने शुद्ध ज्ञानांजनद्वारा अभ्यंतर ज्योति प्रकटावता, उग्रविहारना नियमोने अमलमां आणता. उग्र तपस्यादि करता पाटण थइ मेडते पधार्या. त्यांना धार्मिक प्रेमवाळां जनोने गुरुश्रीए सद्बोध आ शुद्ध क्रियानुष्ठान दर्शाव्यां, तेमज तेनुं पालन कराव्युं. पछी फलोधी पार्श्वनाथजीनी यात्रा करवा पधार्या. त्यां वामानंदन भवभयनिकंदन श्रीपार्श्वप्रभुने वंदी श्रीपार्श्वचंद्रसूरिजी अहो भाग्य मानवा लाग्या. त्यांथी विहार करी रूणग्राम के जे सर्पदर भैरवना प्रतापथी प्रसिद्ध छे ते स्थळे पधार्या.

मानवाने कारण मळे छे के, सत्य क्रियानुष्ठानवाळा अने उग्र तपवान् प्रभाविक पुरुषोनां पदवंदन करवा उत्तम देवो पण इच्छा धरावे छे अने तेम इच्छा सफळ थयेली ते स्थळमां दृष्टिगोचर थइ. खास क्षेत्रपति-भैरवजीए तो गुरुजीना चरणमांज रही श्री

जाणवी पण दर्शनविजयनी शोभा छे ! कृतार्थ ! हवे भविकोने मन दीक्षानो फरी वर भावंद करो ! " इत्यादि दीनवाणी श्रवण करी गुरुवर्ये ज्ञानोपयोग अने निमित्तना सामुद्रिक चिन्होथी उद्योत जाणी आत्मा जागी ते हद्दवर्षे कल्याणक महोत्सवपूर्वक दिक्षा आपी विजयदेवमुनि नाम राख्युं. ए समयना त्याग वड थी सह समुदाय आत्मानंद पाम्यो अने देवगुरुनी भक्तिना नशेन बनी गुरु-गुणगान मानवभवनो लाव लेवा लाग्यो.

तदनंतर विहार करी शिष्य सह पृथ्वीना नागोर शहेरमां पावन पगलां थयां. ते स्थलनी अंदर चतुर्विध संघने उत्कट करना वैराग्यने योग उपासनाना वचनथी संसारेथी आवकनो उत्सवनो अंत करी पुण्यजीव एक विनंतावाडी भाविकोने वाटना जोती जेथी त्यां घणा सभी शोभित आवश्यक महामार्गपर्यंत अनन्यात कर्यो, अने श्रावक श्राविकागण दर्शदानपूर्वक थतां श्रेयस्कर क्रियानुष्ठान आदरी कर्मबंधनना मर्मने भांगवा लाग्यो.

श्री संघना आग्रहथी ते मासनुं चोमासुं त्यांज करी पोता आगलां पाटी जगावी अने कनकावली तप करी आचार्य महाराजे जयवंतनुं माहात्म्य समर्पिदमां आप्युं. ते स्थलनी अंदर लोंकाशाह नामना गृहस्थ स्थानकवासि (मूर्तिउथापक) नो मत स्थापनार कमीएव पतन आदरी रहेल होवाथी सूरिजीए तेमने जैनसिद्धांतोनो

दर्शन करी जीवननी सफळता सिद्ध करी. सुंदर सुखद शीतळ रेवता-चळने अने ते समयने धन्यातिधन्य मानता, धर्मध्यानथी कर्म निर्जरणा करता करावता अने भव्यजीवोने धर्मोपदेशद्वारा रत्न-त्रय (ज्ञान दर्शन चारित्र रुप रत्नत्रयी) नुं ओळखाण आपी वसु-न्धरा केटलोक समय श्रीकृष्णजीए त्यांज स्थिरता करवानी अनुकूळता मानी अने त्यां एकटाणा–एकविश उपवास कर्या.

त्यार पछी भवितव्यनेत्र दर्शन आपनार भाग्यभूषण सिद्धगि-रिराजनां परमोल्लास सह दर्शन करवा आचार्य भगवाने विचार्युं अने क्रमशः विचरता विचरता थोडे समये विमळाचळने भेटी पार संसारनो पार भेटी निष्पर्वने ते तारणतारण गिरिराजनुं गंभीर माहात्म्य संवेगथी समजावी अपूर्व स्तुति गर्भ स्तवनो रच्या. भक्ति भावना उल्लास वडे पुष्कळ कर्म मळने धवाती सिद्धांतानुसार मनहर तीर्थराजनो रास बनावी देवो सम करी भव्य जनोना निस्तारनो सरळ उपाय बतावी दीधो अने त्यांज सर्वतोभद्र तप प्रारंभी पूर्ण कर्यो, तथा पांच भव्य जीवोनो उद्धार करी संयमी कर्यां.

तीर्थराजनी शीतळ छायामां केटलोक समय स्थिरता कर्या बाद विहार करता वल्लभीपुर (वळा धणाखरी के ज्यां देवर्द्धिक्ष-माश्रमण गणि महाराजे आगमो पुस्तकारूढ करी धारणा उद्धारनो मार्ग खुल्लो मूक्यो हतो ते पवित्र स्थळ) नी भेट लेवा पधार्या त्यांना ज्ञानभंडार देखी वगेरेनुं अवलोकन करी विचरता लींबडी

सार संसारनी मोहममतानो त्याग करावी घणां श्रावक श्राविकाओने शुद्ध क्रियावंत कर्यां.

त्यांथी विहार करी श्रीशंखेश्वर पार्श्वनाथजीनी यात्रा करवा पूज्यश्रीजीनी विचारणा थइ, जेथी शंखेश्वर गामे पधारी अतीव प्राचीन परचाधारी प्रतिमाजीनां (मूर्तिद्वे) अंतरंगना रंगनी स्फुरता साथ दर्शन कर्या. विशेषमां स्तवन स्तुतियोनी रचना रची मनकुल तीर्थवंदनानो परमोल्लास प्रदर्शित कर्यो बाद सूरीश मांडल पधार्या. त्यांना श्रीसंघे पधारी गुरुराजनुं पधारवुं थयुं जाणी घणा आडंबर पूर्वक स्वागतपूर्वक करी वाजते गाजते नागोरी वृद्ध तप गच्छाधीशने पुरप्रवेश करावी उपाश्रयमां पधराव्या. उपकारी आचार्य महाराजे भवभयवारक शुद्ध क्रियानुष्ठानना विधान पूर्ण धर्मोपदेश आपी श्रावकधर्म समझाव्यो एटलेके:—श्रावक ए शब्दनो अर्थ शुं ? श्रावक थवाना योग्य कोण कहेवाय ? श्रावके शुं शुं करवुं जोइये ? अने तेवा श्रावक थवा संभाळवाथी शुं शुं लाभ थाय छे ? ते संबंधी फरमाव्युं के:—

सुज्ञश्रोतागण ! जे मनुष्य अचळ श्रद्धा, सतसमनीय विवेक अने शुद्ध क्रिया ए त्रण वडे अलंकृत होय ते श्रावक कहेवाय एम श्रावक ए त्रण अक्षरोज बतावी रहेल छे.

श्रावकमां एकवीश गुणो अवश्य होवाज जोइये. दरेक वस्तु के मानव, पोत पोताना धर्म अने गुणोए करीने युक्त होय तोज वस्तु-

वृद्ध तथा वयोवृद्धनी सेवा करनारो (वृद्धानुग) १८, पोतानाथी विशेष गुण-धारीनो आदर करनारो (विनीत), १९, पोतानी उपर करेला उपकारने भूली न जतां उपकारीने उत्तम बदलो आपनारो (कृतज्ञ), २०, कोइने कंइ लाभ थतो होय तो पोताना फायदानी आशा न राखतां भलानुंज हित करनारो (परहितार्थका-री) अने २१, धर्मकार्य संबंधमां उत्तम शिक्षण मेळवनारो (लब्ध-लक्ष्य) ए एकवीश गुणोए करीने युक्त होय तेज श्रावकना इल्काबने लायक छे. नामथी श्रावक नहीं, पण गुणोथी बनेलो मात्र श्रावक परम प्रशंसाने योग्य होवाथीज शास्त्रोमां बखाण श्रीवीतरागदेवे पण स्वमुखथी वर्णवेलां छे.

श्रावके बेटंक प्रतिक्रमण, बनी शके ते पच्चख्खाण उच्चरवुं यथाशक्ति चौद नियमो धारण करवा, बनी शके तेटला प्रमाणमां बारव्रत अंगीकार करवां, पाप-व्यापारथी निवृत्त रहेवुं, सद्गुरुनी वाणी सांभळी तेनुं रहस्य आचरणमां मूकवुं, शुद्धदेव तथा शुद्धगुरु अने शुद्ध धर्मक्रियानुं सदा सेवन करवुं. सुपात्र दान देवुं, सदाचार पूर्णनीतिथी वर्तवुं, मिथ्यावाद-कंटकरूप धर्मवाद न करवो, अन्य धर्मनी हरिफाइ द्वेष पूर्वक न बताववी, वचनथी दरिद्र न रहेवुं, दरज्जा मुजब वेषालंकार राखवो. कमतीमां कमती कमाणीनो दशांश पुन्य-मार्गमां वापरवो, मार्गानुसारीना पांत्रीश बोलोथी विरुद्ध न वर्तवुं, अंधश्रद्धालु न बनतां तत्त्वातत्त्वादिनुं वगेरे रहस्य मेळवी शुद्ध

ધર્માના મર્મો હૈય પાડવા, ધર્મતત્ત્વ ન જતાં ધર્મવૃત્તિમાં મગ્નુ. વળી દુઃખ દૂર કરી દબાવવું, એટલે શીઘ્ર ધર્મધ્યાને અને સાધર્મિકોની સૂરિની સાર સંભાળ લેવી. દીન હીન અશક્તજનને દયા બુદ્ધિથી દેવતા સહાયતો આપવી, કુલક્રમાગતો-કલાવતી-શીલવતીના નિરંતર દેવપૂજાની વ્યવસ્થાને ધ્યાન આપી નમાવી નિર્મળ અને દીપક કરીને જન લાવવો, દીક્ષિતોના સંતોષ અને અભય-મનુષ્યગતિમાં દુઃખ દૂર કરવો, સંઘના ધર્મ-બંધુઓને હિતના આશીર્વાદ દઈને દૂર પાપના જોર આદિ મારા ભાવ કરી -વ્યવહારે સમતા દુઃખ દૂર કરવા નિશ્ચય કરી કે, ગર્વના નાશ કરીને ધર્મ દેવ ગુરુના ન રહેવા દેવું, જો કોઈ માયાવી પૂર્ણ પાપી મહાભાગ્ય પણ માનવું. ધર્મની અવજ્ઞા ધર્મદૂષણ કે શીલના ભંગ સ્વરૂપ પાપ વગેરેથી ન થવા દેવાં લક્ષણો ઉદ્‌ભવ થાય તેવા લાગ આવવાં. તેમને ગુરુ કરી પુત્રોનો એમ માનવો. તેઓ વડે ધર્મારાધનાના સમતા મિથ્યાભિમાન-દુરાગ્રહ વધારવા અર્થે ઉપયોગ ન કરવા ઉદાર-નીય પ્રયોગો વડે ધર્મપુષ્ટ બનાવવાનો ધારો. ધર્મના તત્ત્વ જાણવો સાથે પૂર્ણ ધ્યાન આપી તે શુદ્ધ ધર્મના અનન્ય પુષ્ટ ઉપાસક થવું. દાન-શીલ-તપ-ભાવનામાં રક્ત રહેવું. શિષ્યાઓ, શ્રાવકો વગેરેમાં વિરક્ત દૃષ્ટાંત રહેવું. નમ્રતા સાથે દાનની વૃદ્ધિ કરવી. ગુરુજનોનાં વ્યાખ્યાનોનો વિશેષ લાભ લેઈ તેના સાથે વર્તવો અને નિરંતર આત્મકલ્યાણમાં લીન રહી સર્વસ્વ પરિગ્રહાદિની મૂર્છાથી અલિપ્ત રહેવું.

सूरीजीना वचनाविश्ययवडे त्यांना रहीश शेठ भीमाशाह अने धाराकादेवीना सपूत पुत्र अमरसींह के जेनो जन्म संवत् १५६० ना मागशिर शुदी ११ ना रोज शुभ समय थयेलो ते फक्त पंदर वर्षनी उमरेज अंतरंग वैराग्यथी रंजित थइ सूरीराजनी आगळ आवी जिनराजनी प्रव्रज्या अंगीकार करवानी (तेमणे) वीनती करी. ते श्रवण करीने साचो वैराग्य प्राप्त थवानो परीक्षा लइ माता पितानी अनुमति मागी लाववानी फरज पाडी.

समजु मावापे कुलोद्धारक कर्तव्यकर्त्ताने अति लाभनुं कारण जाणी अनुमति आपी, जेथी अति आडंबर वाळा महोत्सव पूर्वक बाळ ब्रह्मचारी बुद्धिनिधान कुमार अमरसिंहे सूरीजीना हस्तथी विक्रम संवत् १५७५ ना मागशिर शुदी ५ ना दिवसे दीक्षा अंगीकार करी. आनंद मंगळ वर्त्तायो अने सत्कर्मनी विशेष प्रवृत्ति अमलमां आवी.

बीजा शिष्यो विद्यमान हता अने विद्याभ्यास करता हता; तथापि नवदिक्षित समरचंद्र मुनि महान् तीव्र बुद्धिशाळी होवाथी तेओ विद्याध्ययनमां सर्व करतां आगळ वध्या, प शेठ सूरीवरे भविष्यमां पाटना अधिकारी थवानी आशानी आगाही मानी लीधी.

तदनंतर विहार करता करता आचार्य महाराज अमदावाद पधार्या; परंतु ते अरसाती अंदर शहेरमां मरकीनो उपद्रव जोसभर चालो रहेलो होवाथी राजनगरनिवासि त्रास पामी नासभाग करी

थतां (कर्मोपकर्न प्रभाव जाणवानां आवतां) सद्भावनानी श्रेणी वृद्धिवंत थइ, पछी गुरु राजने अति उत्सव सहित पुरमां पधरावी उपाश्रयमां विराजमान कर्या.

दरम्यान एक हृदयद्रावक ए विना बननी दृष्टिगोचर थइ छे, त्यांना राज्यकर्ता नवाब साहेबे पोताना धर्म-क्रियाना दिवसने रोज पोताना मजहबनी अंधश्रद्धी मुजब गायनी कुरबानी करवा एक हृष्टपुष्ट गायने पकडी मसजिद तरफ लइ जवा फरमाव्युं. पछी नोकरो गोवध माटे उत्सुक थया हता.

श्रीसंघे ए कृत्यने अनिष्ट जाण्युं अने पूज्यश्रीनी पधरामणिना मंगळ दिवसे एवुं दुष्कृत्य न थाय तोज आनंद वृद्धि पामे. एम धारी नामदार नवाब साहेब आगळ जइ ते दुष्कृत्य संबंधी अरज गुजारी; परंतु धर्मकृत्य मानेलुं होवाने लीधे ते संबंधे कशुं ध्यान आपवामां आव्युं नहीं. जेथी श्री संघना आगेवानो निराश थइ पाछा वळ्या अने पूज्यश्रीने आवी गोवधनी वार्ता रोशन करी.

वार्ता श्रवण करीने योग शक्तिरूप दैवीशक्ति मारफत गायने अदृश्य करी दीधी अने वध करवा लइ जनाराओ ज्यां हता त्यांज स्तंभन थइ गया. ए जेठ मारे अजायबी भर्या बनावना समाचार नवाब साहेबने पहोंच्या. पछी तेमणे जाते आवी ने बातनो बारीक तपास कर्यो तो पोते पण ताजुबी पामी गुरु महाराजने मळी पछी बेअदबीनी माफी मागवा उपाश्रये जइ पहोंच्या. अंदर

खबर आपी नवावे श्रीमद् गुरुराजने पूर्ण मर्यादा युक्त वंदनादि करी थयेली बेअदबीनी माफी मागी. श्रीपूज्ये तेवुं हिंसाकृत्य फरीने न करवा विचारणा जाहेर करी, एटले के–जीव मात्रनो आत्मा आपणा जेवोज छे. सर्व जीवो सुखनी इच्छा राखे छे. मरण कोइने पण प्रिय नथी. प्राणी मात्र पोत पोताना काम वखते पहेले नंबरे हकदार, उपयोगी साधनभूत तथा परोपकारक छे. मनुष्य, ज्ञानवंत होवाथी अन्य जीवोने न्याय आपवा बंधाये लछे. परोपकार, न्यायबुद्धि अने सदाचार ए मानवोनुं उत्तमोत्तम भूषण छे. पोतानां बाळकोनुं पालण पोषण करी बीजा प्राणीओना बाळकोने बेगुन्हेगार छतां बेजान करवां ए शुं इन्साफी राजाओनो धर्म छे ? शुं पशुओने मारी तेना पिंडनी कबर पेटमां बनावी लेवी ए उत्तमनीति गणाय ? शुं राजा यह ज्ञानेंद्रीयोवाळा यइ बीजा जीवोना प्राणधन उपर घाप मारवी ए योग्य छे ? म्होंमां तरणां लेनारने पण जबह करवां ए शुं राओनो धर्म छे ? शुं बांधी मुंधी रुंधी ते अनाथ जीवोनो पराणे पराणे जीव लेवो ए मागसाइ छे ? शुं पाप–कर्म करवा थीज प्रभु राजी रहे छे ? शुं हिंसामांज धर्म समायलो छे ? शुं अकराकर केर करवाथी जन्नत मळे छे ? तो पछी दोझखना अधिकारी कोने गणवा ? न्यायसेतु मालिक होवा छतां तेज अन्यायने मान आपी पराया लोहीथी तन्न थाप छे ? शुं

निर्दयी, कमकमाटी भर्यो कृत्यो करनार धर्मान्धो हाथी निवानी खाली बोलती धर्मगुरु अने दीनने ओळखनार गणाय छे ! शुं महुना दिलमां रहेम होती नथी ! शुं मनुष्यज राजानी प्रजा छे अने तेनी सीमामां रहेतां पशु पक्षीओ प्रजामां गणातां नथी ! शुं पशुओनी मदद वगर चालतो राज्यनी तीजोरी भर राखी शके छे ! शुं धर्मना दिवसे पाप करवुं उत्तम काम छे ! शुं ज्हारे न पाप तेवा कंगालनेज मारवा माणसना हाथ. शूरवीरनी तरवार के अन्य शस्त्र अस्त्र, अने हृदय मरजायलां छे ! शुं गरीब जीवोनो शिकार करवामांज राजा वगेरेनुं पुरुषार्थ समायलुं छे ? शुं मानवो अने पशुओने परिपाटनी टाट भारवामां मालिक वपायनना रोज पसनाय करी इन्सामने हवामां उडावेज ? जे मालिके–चोरी न करवी, श्रीरर बदनिगाह न करवी, जुठ न बोलवुं, चुगली न खावी, शराब न पीवो, जुगार न रमवो. व्याज न खावुं, बद काम न करवां अने रोजामां नवुं दानज मरवुं पण न चाखवा फंट्रोज सुधी परज दातण करी वनस्पतिने आमथी मुक्त करवी इत्यादि फरमान फरमावेल छे, शुं तेज मालिक बीजा जानदारोना जुल्मथी जान लेवामां सलाह आपी होवी जोइये ? शुं जुल्म करनार माल्लिकने आसीस कहेवी व्याजबी छे ? शुं बीजाओना काळजा फोडी हृदय ठोकीने पोते राजी थवुं अने ते पण फक्त पांच पचीस पळना लिज्जतस्वाद माटे आटलो पयो बीजा निरपराधीस

पाप जेवां काम करो ! बदी छोडो ! नेकी करो ! खुदानो खोफ राखो ! कोईने न सतावो ! जुल्म करशो तो कयामतना रोज जवाब आपवो मुश्किल थइ पडशे ! जेवुं करशो तेवुंज पामशो ! अने जे हाथे जेवां काम करशो तेवी शिक्षा के बक्षीस मेळवशो. शुं ए धर्मशास्त्रोने पण बाजुपर मूकी तेमानुं पोताना मतलबने बनतुं वगर पापनो समजे पाप थई धर्म पुन्य मानी लीधुं छे ते सत्य मानवा योग्य छे ? कह्युं छे के–

(गझल.)

रहम् जो करना है बदला रहम्का वोह पायगा !
जुल्म करताहै तो बदला जुल्मका मिल जायगा !
रहम् जालिमपर करे गर पाक रसूल आलमीन .
जुल्म फिर मजलूमके हकमें पुन हो जायगा ! रहम. १
बख्शदे अपना गुन्हा हकपर नही इकरूहरशाद,
ये कहा किसने तुझे जालिमसी बदला जायगा ! रहम. २
मार तो राहमें करे इक शिकस्ता जुल्मन अजीम,
इक मगर चंगोंका वोह पल्टे तो बदला आयगा ! रहम. ३
जुल्मका तासीर रहमांकी जगा फरमान है,
पेड बाबूलोंके बोकर आम कहांसे खायगा ! रहम. ४
नेकीसे मजलूमको जालिमकी दे दावर अजर,
सब गुन्हा मजलूम इक जालिमके सर धरवायगा ! रहम ५

जाळवीने जे पेटने फाडी दे ते डाह्यानुं काम नथी; पण खरेखर गांडा नुंज काम छे. राज्यनो सघळो आधार खेती उपर छे अने खेतीनो सघळो आधार बळदपर छे; परंतु बळदोने जन्म देनारीज नाश पामशे तो पछी राज्यनीज आबादी शी रीते रहेशे तेनोज ख्याल करो ! पोतानी दोलतनी पोतानाज पायमाली करवी ए शुं डाहपण भर्यो प्रकार छे ? जेने मालिक बचावनार होय के आयुष्यवत्वान् होय तेने कोण मारनार छे. लौकिकमां कहेवत पण छे के, मारनार बे हाथ वाळो छे अने बचावनार हजार हाथ वाळो छे, गमे तेम हो पण निमित्त वगर के आयु मृत्यु वगर कोइ कोइने मारनार छेज नही एवो कायदो छतां अकस्मात मरण निपजाववा तैयार थवुं ए कुदरतना के देवना कायदो तोडवाना इरादाने लीधे दरम्यानगीरी करवी तदन गेरव्याजवी छे. दया एज धर्मनुं मूळ छे ! दया एज स्वर्गनो पायो छे, दया एज मोक्षनो दरवाजो खुल्लो करनार दरवान छे, दया एज बन्ने दुनियामां फतेह आपनार छे अने दया एज बंधनना रोग बचावनार छे माटेज छेल्ला शब्दो कहेवामां आवेछे के.

(क्यूं जवानी खो रहेहो—गझल भैरवी.)

जुल्म करना छोड दो, जालिम सुखके वास्ते;
है यह इन्सान नादां, अपने स्वादके वास्ते. जु. १

अने जैनशासननी उन्नति थवेली जाणी शुद्ध क्रियानुष्ठाननो पूर्ण रागी थयो. स्वामीवत्सल, उच्छव महोत्सव, पूजा, प्रभावना, गुरुभक्ति, अभयदान आदि करवा पछिथी साधवी जीवननो लहाव लेवा लाग्यो.

तदनंतर विहार करी गुरुदेव थावी–संघार–जेसलमेर थइ मरुच पधार्या अने धर्मव्याख्यानमां अपार लाभ मेळवता सुरत शहेरमां धर्मनी लहेर फेलावता वडोदरा भणी थइ माळवदेश तरफ विचर्या.

माळव देशनी अंदर द्रविडदेशना वासनो पाखंडी विचरी धर्म धर्मोपदेश करावता हता, जेमने संसारवृद्धि करनार जाणी सूरीश्वर तत्त्वबोध आपीने–धर्मनां दश लक्षणो छे, एटले क्षमा (क्रोधनो अभाव) मार्दव (माननो अभाव), आर्जव (कपट रहितपणुं), मुक्ति (निर्लोभता), तप (इच्छानो रोध करवो), संयम (संसारव्यवहारनो त्याग), सत्य (साची वाणी वदवी), शौच (अंतरंगनी परम शुद्धता), आकिंचन (परिग्रहादि पाप संबंधनो परित्याग), अने ब्रह्मचर्य (सर्व प्रकारे विषय वासनानो त्यागभाव), आ दश वस्तु ज्यां विद्यमान होय त्यांज धर्म विद्यमान होय छे. तेमज जे आचरणोने पवित्र पुरुषो सबंधे तेज धर्म, तथा जेना आचरणथी पोतानो उदय अने आत्मकल्याण थाय तेज धर्म, अथवा जे कार्यनी शरुआतन त्याय सहित होय तेज धर्म कहेवाय छे; परंतु देश घणा बडे डॉळ देखाडवानो आडंबर राखवो, रहेनी कहे

पाल आपवा तरफ दोराया. दरम्यान नदीना अधिष्ठायक देवे ने विचारणाने अनुसरी जल प्रवाहने जड बनावी स्थलरूप करी दीधो जेथी गुरुजीनी पालखी धारणाने सफल्ता प्राप्त थइ. अपकायनी विराधना थती अटकी एथी वधो आनंद मानी सूरीश्वरें आगळ पधारवा उत्कंठा राखी; पण वचमां चोवीस पीर के जे इसलामी पंथना चमत्कारिक इस्लमां आगवी ख्यातीरूप हता तेमणे गुरुना आत्मबळनी बानगी जोवा विचार्यु अने केटलाक प्रश्नोत्तर कर्या: तथापि आखर तत्त्वनी वातो मनमां उमीजतां प्रतिबोध पामी गुरुने बहु मान आपवा लाग्या.

गुरुजी पण तेमनो महा विनय इच्छी उजेणमां पधार्या अने त्यांना अनेक ब्राह्मणोने शुद्ध धर्मोपदेश वडे प्रतिबोधी क्रियानुष्ठान संबंधी चालती अंधाधुंधी बंध पाडी सवळीग बनाव्या. तेमज त्यांना राजाने प्रतिबोधी जीवहिंसा थती अटकावी शुद्ध श्रद्धावान श्रावकधर्म अंगीकार कराव्यो.

तत्पश्चात् ग्रामानुग्राम विहार करता मालव प्रदेशनी अंदर हजार कमाइने दयामय धर्म उचरावी हिंसा कर्मथी बचाव्या.

वाचक वृंद ! मालवदेशनी केटलीक मुनिओ वसता केटलाक जीवोनो उद्धार करी सूरीश मेवाड भूमिना भूषणरूप उदयपुरमां पधार्या, अने त्यां पण तेज व्याख्यानथी विशेष लाभ मेळवता मेवाडमां विचरी मारवाड तरफ पधारी मरुधर राज्यना पाटनगर जोध-

चाववा. पगथी पग घसीने धोवा नही. कोइने आळचडाववुं नही, गुप्त वात प्रकाशमां लाववी नही. कष्ट पड्ये हामली न जवुं. विपत्ती वखते धीरज धरवी. रात्रे कोइने घेर जवुं नहीं. वगर तेड्ये कोइने त्यां जवुं नहीं. राजा अने राजकुटुंबीओनो पूरतो विश्वास राखवो नहीं. सन्मार्गे प्रवर्त्तवुं. सदा चरण सेववां. सत्संगति करवी. नवलाथी वादविवाद न करवो. वैर, विवाह अने प्रीती बराबरियाथी करवां. आळसु थइ सत्कृत्यो न्हेतां मूकवां नहीं. न्यायथी धन उपार्जन करवामां कटिबद्ध रहेवुं. अर्थीने दान देवुं. मळेला धननो अने मळेली विद्या कळा आदिनो सदुपयोग करवो. अति उडाउ थवुं नहीं. शक्ति छतां कंगाल कंजुस थवुं नहीं. बळियाथी बाथ भीडवी नहीं. देवाथी डरवुं. याचकने नाकारो करवो नही. कषाय-विषय-कंटक पणाथी दूर रहेवुं. स्वदेश-स्वधर्म-स्वज्ञातीनुं अभिमान राखवुं. आज्ञाना पालणामां झुली छोभनी मूर्तिरुप गणावुं नहीं. दीन दुःखीनी व्हार करवी. सभ्यताथी वर्तवुं. रात्रीचर्या-दिनचर्या-ऋतुचर्यादिना नियम ध्यानमां राखी जे धर्म वगेरेने के व्यवहारने बाध करनार न होय ते बधा ध्यानमां राखवा. कोइ पण धर्मनी निंदा करवी नही. सर्वनुं मान जाळववुं. राज्यभक्त रहेवुं. पारकानी पीड जाणवी. सार्वजनिक कार्यमां शक्त्यानुसार भाग लेवो. विद्याकळा मेळववामां अत्याग्रही रहेवुं. ठग-धूतारा-चोर-लंपट-चुगलखोर-जुगारी आदिथी विरक्त रहेवुं. प्रपंचजाळमां फसावुं नहीं. पोतानो भरम कोइनी

ए तो मे पोतानी मतिनोज दोष गणाय ! एमेनां उत्तम
रत्न झवेरीना हाथ जतांज तेनी साची कीमत मकानमां अथवा
पावे छे. कहुं छे के—

(लावणी.)

कस्तूरनी पारख नहीं ते शुं केसरनी कीमत करशे ?
नहीं पारखे पीतळ ते शुं मूल्य कनकनुं मन धरशे ?
खाखरनी खिसकोली ते शुं साकर मूल्यज उच्चरशे ?
खाय खोळ ते गोळतणी शुं भक्ति टहेलज केम करशे ?
एम कुमत अज्ञानी द्वेषी ज्ञानीजनने शुं जाणे,
हाय झवेरी तेज जवाहीर पिछाणी हेत हृदय आणे ! १
खारा जळनी माछलडी ते मीठाजळने नव चाहे,
भूंडणना भूंडक जे मन अमीने नव आराहे;
कामनाश्रना गणी ते नव तत्त्व ग्रंथने अवगाहे,
ओखरमती कुकर ते नव पीठाइ खावा उमाहे;
कीमत नहीं जे मनने जेनी तेनी पर प्रेमन आणे, हाय. २

तदनंतर गुरुराज नागोरनुं चातुर्मास पूर्ण थवाथी संवत १६०४
नी सालमां विहार करता अने भविक जीवोपर उपदेशद्वारा
अनुग्रह करता उपाध्यायनी समरचंदजी वगेरे शिष्य समु-
दाय सह आचार्य महाराज श्री अनुक्रमे ज्यां ज्यां पधार्या
तेनो क्रम नीचे मुजब छे—

ऐ तो ते पोतानी मतिनोज दोष गणाय ! हमेशां उत्तम रत्न झवेरीना हाथ जतां तेनी साची कीमत प्रकाशमां आवता पामे छे. कह्युं छे के—

(लावणी.)

झवेरनी पारख नहीं ते शुं केसरनी कीमत करशे ?
नहीं पारखे पीतल ते शुं मूल्य कनकनुं मन धरशे ?
सालरनी गिरुआईनी ते शुं साकर मूल्यन उच्चरशे ?
खाय खोळ ते गोरसनी शुं मल्लि लहेजत केम वरशे !
एम मुग्ध अज्ञानी द्वेषी ज्ञानीजनने शुं जाणे,
हाय झवेरी तेम जवाहिर निरखी हेत हृदय आणे ! १
त्याग नम्रनी माळखडी ते मीठाशने नव चाहे,
धूर्तमतना पूजक जे जन अर्हंतने नव आराहे;
कामवासना रागी ते नव नम्र ग्रंथने अवगाहे,
भीतरमांही झहर ते नव मीठाइ खारा उमाहे;
कीमत नहीं जे जनने जेनी तेनी पर प्रेम न आणे, हाय. २

तदनंतर गुरुराज नागोरनुं चातुर्मास पूर्ण थयाथी संवत १६०४ नी सालमां विहार करता अने भविक जीवोपर उपदेशद्वारा अनुग्रह करता उपाध्यायजी समरचंद्रजी वगेरे शिष्य समुदाय सह आचार्य महाराज श्री अनुक्रमे ज्यां ज्यां पधार्या तेनो क्रम नीचे मुजब छे—

छे तो ते पोतानी मतिनोज दोष गणाय ! हमेशां उत्तम रत्न झवेरीना हाथ जतांज तेनी साची कीमत प्रकाशमां आववा पामे छे. कह्युं छे के—

(लावनी.)

कस्तूरनी पारख नहीं ते शुं केसरनी कीमत करशे ?
नहीं पारखे पीतल ते शुं मूल्य कनकनुं मन धरशे ?
खाखरनी खिसकोली ते शुं साकर मूल्यज उच्चरशे ?
खाय खोळ ते गोरसनी शुं लज्जित लहेजत केम वरशे ?
एम मुजब अज्ञानी द्वेषी ज्ञानीजनने शुं जाणे,
होय झवेरी तेज जवाहिर रिझाणी हेत हृदय आणे ! १
काग जम्बुनी भाटळडी ते मीठामळने नव चाहे,
भूतप्रेतना पूजक जे जन अर्हंतने नव आराहे;
कामशास्त्रना रागी ते नव तत्त्व ग्रंथने अवगाहे,
भोखरमती ढूकर ते नव मीठाइ खावा उमाहे;
कीमत नहीं जे जनने जेनी तेनी पर प्रेमन नाणे, होय. २

तदनंतर गुरुराज नागोरनुं चातुर्मास पूर्ण थवाथी संवत १६०४नी सालमां विहार करता अने भविक जीवोपर उपदेशद्वारा अनुग्रह करता उपाध्यायजी समरचंद्रजी वगेरे शिष्य समुदाय सह आचार्य महाराज श्री अनुक्रमे ज्यां ज्यां पधार्या तेनो क्रम नीचे मुजब छे—

छे तो ते पोतानी मतिनोज दोष गणाय ! हमेशां उत्तम रत्न झवेरीना हाथ जतांज तेनी साची कींमत मकानमां अथवा पामे छे. कह्युं छे के—

(लावणी.)

इन्द्रनी पारख नहि ते शुं केसरनी कींमत करशे ?
नहीं पारखे पीतळ ते शुं मूल्य कनकनुं मन धरशे ?
श्यामरनी सिमकोची ते शुं माहर मूल्यज उच्चरशे ?
स्वाप जेळ ते कोयलनी शुं मन्जिल महेनत देम धरशे !
पण सुनव अज्ञानी हुंषी अर्जाजनने शुं जाणे,
हाय झवेरी तेज जवाहिर सिवाणी हेत हृदय आणे ! १
ज्यारे कल्पी माळणी ते पीठाळने नवधारे,
भूषंतना पूजक जे जन अर्हंतने नव भाराहे;
कामनाशना रागी ते नव नम्र ग्रंथने अवगाहे,
भोगरभागी सूकर ते नव पीछा स्वाद उमाहे;
कींमत नहीं ते जनने जेनी तेनी पर बेदम नाणे, हाय. २

तदनंतर गुरुराज नागोरनुं चातुर्मास पूर्ण थवाथी संवत १६०४ नी सालमां विहार करता अने भविक जीवोने उपदेशद्वारा अनुग्रह करता पासचंदजी समरचंदजी वगेरे शिष्य समुदाय सह आचार्य महाराज श्री अनुक्रमे ज्यां ज्यां पधार्या तेनो क्रम नीचे मुजब छे–

छे तो ते पोतानी मतिनोज दोष गणाय ! एमेजां उत्तम रत्न झवेरीना हाथ जतांज तेनी साची कीमत मझावमां आववा पामे छे. कहुं छे के—

(लावणी.)

हल्दरनी पारख नहीं ते शुं केसरनी कीमत करशे ?
नहीं पारखे पीतल ते शुं मूल्य कनकनुं मन धरशे ?
साकरनी सिलछोन्नी ते शुं साकर मूल्यज उच्चरशे ?
साप सोळ ते गोल्वनी शुं लब्धि टहेजव केम वरशे !
एज सुजब अज्ञानी द्वेषी ज्ञानीजनने शुं जाणे,
हाय झवेरी तेज जवाहिर रिझाणी हेत हृदय आणे ! १
खारा जलनी माछलडी ते मीठाजळने नवचाहे,
भूतनेतना पूजक जे जन अर्हतने नव आराहे;
कामवासना रागी ते नव तत्त्व ग्रंथने अवगाहे,
ओखरभक्षी डुक्कर ते नव मीठाइ खाता उमाहे;
कीमत नहीं जे जनने जेनी तेनी पर प्रेमज नाणे, हाय. २

तदनंतर गुरुराज नागोरनुं चातुर्मास पूर्ण थवाथी संवत् १६०४ नी सालमां विहार करता अने भविक जीवोपर उपदेशद्वारा अनुग्रह करता उपाध्यायजी समरचंदजी वगेरे शिष्य समुदाय सह आचार्य महाराज श्री अनुक्रमे ज्यां ज्यां पधार्या तेनो क्रम नीचे मुजब छे—

छे तो ते पोतानी मतिनोज दोष गणाय ! हमेशां उत्तम रत्न झवेरीना हाथ जवांज तेनी साची कीमत प्रकाशमां आववा पामे छे. कहुं छे के—

(लावणी.)

हलदरनी पारख नहीं ते शुं केसरनी कीमत करशे ?
नहीं पारखे पीत्तल ते शुं मूल्य कनकनुं मन धरशे ?
खाखरनी खिसकोली ते शुं साकर मूल्यज उच्चरशे ?
खाय खोळ ते गोचरनी शुं नक्तिन टहेलव देख वरशे ?
एम हुनर अज्ञानी द्वेषी ज्ञानीजनने शुं जाणे,
होय झवेरी तेज जवाहिर पिछाणी हेत हृदय आणे ! १
खाग जल्नी माटलडी ते मीठामधने नवचाहे,
भूर्तमतना पूजक जे जन अर्हतने नव आराहे;
कामशास्त्रना रागी ते नर तत्त्व ग्रंथने अवगाहे,
ओखरमती इकर ते नर मीठाइ खाता उमाहे;
कीमत नहीं जे जनने जेनी तेनी पर प्रेमन नाणे, होय. २

तदनंतर गुरुराज नागोरनुं चातुर्मास पूर्ण थवाथी संवत १६०४ नी सालमां विहार करता अने भविक जीवोपर उपदेशद्वारा अनुग्रह करता उपाध्यायजी समरचंदजी वगेरे शिष्य समुदाय सह आचार्य महाराज श्री अनुक्रमे ज्यां ज्यां पधार्या तेनो क्रम नीचे मुजब छे—

छे तो ते पोतानी मनिनोज दोष गणाय ! हमेशां उत्तम रत्न झवेरीना हाथ जवांज तेनी साची कीमत मकानमां आववा पामे छे. कहुं छे के—

(लावणी.)

हव्वरनी पारख नहि ते शुं केसरनी कीमत करशे ?
नही पारखे पीतल ते शुं मूल्य कनकनुं मन धरशे ?
सागरनी सिसकोशी ते शुं साकर मूल्यन उच्चारशे ?
स्वाय खोळ ते गोळनणी शुं नन्दिन लेइजय केम धरशे !
एम मुनव अज्ञानी द्वेषी ज्ञानीजनने शुं जाणे,
हाय झवेरी मेज जवाहिर रिजानी हेत हृदय आणे ! १
त्याग जन्मी माळनी ते मीठामलने नवधारे,
भूतेनना पूनक जे जन अर्हतने नव भारारे;
कामदायना गानी ते नव नग्न ग्रंथने अवगारे,
भोगरमाशी इश्वर ते नव मीठा ग्यावा उत्तारे;
कीमत नहि जे जनने जेनी तेनी पर प्रेमम नाणे, हाय. २

तदनंतर गुरुराज नागोरनुं चातुर्मास पूर्ण थवाथी संवत १६०४ नी सालमां विहार करता अने भविक जीवोनर उपदेशद्वारा अनुग्रह करता उपाध्यायनी समरचंद्रजी वगेरे शिष्य समुदाय सह आचार्य महाराज श्री अनुक्रमे वर्षा वर्षा थवाथी तेनो क्रम नीचे मुजब छे—

छे तो ते पोतानी मतिनोज दोष गणाय ! केमके उत्तम रत्न झवेरीना हाथ ज्यांज तेनी साची कीमत ख्यालमां आववा पामे छे. कहुं छे के—

(लावनी)

हल्दरनी पारख नहीं ते शुं केसरनी कीमत करशे ?
नहीं पारखे पीतल ते शुं मूल्य कनकनुं मन धरशे ?
खाखरनी खिसकोली ते शुं साकर मूल्यज उच्चरशे ?
साप रोळ ते मोरलीनी शुं नक्कि डोलेल केम वरशे !
एम मुरख अज्ञानी देही ज्ञानीजनने शुं जाणे,
- होय झवेरी तेज जवाहिर पिछाणी हेत हृदय आणे ! १
साच कल्पी मारवाडी ते मीठासने नवचाहे,
देवमंदिरना पूजक जे जन अर्हंतने नव आराधे;
कर्मकांडना गमी ते नव तत्त्व ग्रंथने अवगाहे,
भोजरमशी इत्तर ते नव मीठाई खावा उमाहे;
कीमत नहीं जे जनने जेनी तेनी पर नेमम नाणे, होय. २

तदनंतर गुरुराज नागोरनुं चातुर्मास पूर्ण थवाथी संवत १६०४ नी साल्मां विहार करता अने भविक जीवोने उपदेशद्वारा अनुग्रह करता उपाध्यायजी सनतचंदजी वगेरे शिष्य समुदाय सह आचार्य महाराज श्री अनुक्रमे ज्यां ज्यां पधार्या तेनो क्रम नीचे मुजब छे—

ऐ तो ते पोतानी मतिनोज दोष गणाय ! एमेनां उत्तम रत्न झवेरीना हाथ जवांन तेनी साची कीमत मकानमां अथवा थाय छे. कह्युं छे के—

(लावणी.)

रत्नाकरनी पारख नहीं ते शुं रत्ननी कीमत करशे ?
नहीं पारखे पीतल ते शुं सुवर्ण कनकनुं मन धरशे ?
ग्यानवनी गिरकोशी ते शुं साकर मूल्यन उच्चारशे ?
गाय नेत्र ते गोरसनी शुं लज्जित लहेरन केम करशे !
पन सुगर अज्ञानी ढेरी ज्ञानीजनने शुं जाणे,
हाय प्रवर्तन नर नवाहीर तिठाली तेह हृदय आणे ! १
ग्याग नरनी पाउरनी ते पीतामळने नवधारे,
धूमननना पूत्र जे नर अंगने नव भारे;
कानानागना गामी ते नव नव्य ग्रंथने अवधारे,
अंगरभाती हृदर ते नव पीशाश ज्ञाता उचारे;
कीमत नहीं ते मनने तेनी तेनी पर भेदन नांखे, हाय. २

मदनसर महाराज गणेशनुं चातुर्मास पूर्ण थवाथी संवत १६०४ नी सालमां विहार करता अने भविक जीवोने उपदेशद्वारा धर्मपर करता उपाध्यायजी समरचंदजी वगेरे शिष्य समुदाय सह आचार्य महाराज श्री अजमेरने थतां थतां थयां तेनो क्रम नीचे मुजब छे-

(दुहा) धारे वरसी काल टालके जल बरसायो अपार गामें इंन उपद्रव माजे सेवक जन आधार दरश सद्गुरुका सुखकारी ॥ जग० २ ॥ नगर तंवावती आप गये जहां श्रीसंघ सब सके भये नवाव जहांका सिरदारे गाय मारनकुं ध्रकारे ॥

(दुहा) न वचन सुना गुरुदेवका तव दीया मस्जी बनाय गाय छोड पग लगा सुरिद्र के हिंसा दीवी छुडाय देख्य यंत्र चम-त्कारी ॥ जग० ३ ॥ ध्यान सद्गुरुको जो धारे वेदा उसका हो-य पारे दुश्मन दोरी झखमारे धन कीरति जन विस्तारे ॥

(दुहा) महिमा श्री गुरुदेवकीरे सुरगुरुसें न कहाय हरखचंद योडारनि बोले जय जय जय गुरुराय सदा चर-णोंकी बलिहारी ॥ जग० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग कल्याण ॥

सद्गुरु आवो सुख श्रीकारो दूरकरो दारिद्र हमारो ॥ स० ॥ मेरे मंदिर करी सद्गुरुजी सुग दीजो चरन ह-मारो ॥ दीनदयाल दयानिधि दादा दासकी चिन्ता नि-वारो ॥ स० ॥ १ ॥ पार्श्वचन्द्रसूरिंद सद्गुरुजी परतरगछ सिरदारो ॥ तीनलोकमें महिमा । चिहुंदिश जनको [illegible]रो ॥ स० २ ॥ अभि [illegible] की पापनाकीनी मनसद वंग

मा० ॥ ३ बारह बरसो काज पदयो तब नृप आयो पगचारी ॥ करजोडीनें अरज करी तब घन बरसायो भारी ॥ मान० ४ ॥ ॥ बावनवीर अरु चोसठजोगणि रहते आज्ञाकारी ॥ कहत अबीर सदा सद्गुरुको वारी जाऊं वार हजारी ॥ मान० ॥ इति

॥ कजरोनी चाल. ॥

पार्श्वचंद्रसूरींद मन भायानीवे ॥ पार्श्व. ॥ ए टेक ॥ वेल्गसाह विमलादेमाता जाको गुर नर मुनीगण गायानीवे ॥ पार्श्व० ॥ १ ॥ पंचमहाव्रत पालन सूरी गुण छत्तीस धरायानीवे ॥ पार्श्व० ॥ २ ॥ दे उपदेश भविकजन तारे सुमति गुपति मन लायानीवे ॥ पार्श्व० ॥ ३ ॥ समतासागर अनुभवदाता विषय कषाय मिटाया-नीवे ॥ पार्श्व० ॥ ४ ॥ कहे इंद्रचंद मेरे सद्गुरुजी तारण तरण कहायानीवे ॥ पार्श्व० ५ ॥ इति पदम् ॥

॥ राग प्रभाती. ॥

श्री गुरुदेव सहाइ जिनके ॥ श्रीगुरु० ॥ कहा करे कोई पापी दुष्टी दुरजन लोक लुगाई ॥ श्रीगुरु० ॥ १ ॥ गाम नगर पुर पाटण मांहे कुशल मङ्गल वरताई ॥ भगतवच्छल सद्गुरुकी कृपासें सुखसंपति घर आई ॥ श्री गुरु० ॥ २ ॥ चरण कमलकूं जो नित पूजे सो नृप पदवी पाई ॥ श्रीपार्श्वचन्द्र सूरीसरजीके अबीरचंद गुणगाई ॥ श्रीगुरु० ॥ ३ ॥ इतिपदं ॥

गुरु विहार करतां रूनगर पगधारी ॥ आराधित जयसुरपति आये, दीये क्षेत्रपाल सेवाकारीजी ॥ गुरु० २ ॥ भूमंडलवि-चरतां सद्गुरु मालवदेशमें धीर विषम नदीतटपरु सुरङ्ग साथ सब कीये चोविस पीरजी ॥ गुरु० ३ ॥ आरापंचम कलिकालमें सब देवन शिरदेवा ॥ वडतपगच्छनीदादानी दीजो वंछित फल नितमेवाजी ॥ गुरु० ॥ ४ ॥ दीनदयालसर महायन-पाछे श्रीगणधर महाराज ॥ हरषचंद चोहारति सुमरे सिद्धहोय सब काजजी ॥ गुरु० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ रेषता. ॥

सजन गुरु देवकी सेवा देवे गुण ज्ञानकामेवा० ॥ म० ॥ भाविक नर नारी जो ध्यावे ॥ सदा सुख संपदा पावे ॥ १ स० ॥ दादा पार्श्वचंद्रसूरींदा ॥ दरशने दूर दुखदंदा ॥ अटल परताप जग गाजे ॥ सुजसका तूर नित वाजे ॥ २ ॥ लीयागुरुदेव-का शरणा ॥ कृपा निज दास पर करणा कहत अवीर करजो-री ॥ करी वीनती सफल मोरी ॥ ३ स० इति पद ॥

॥ दादाजीनी स्तुति. ॥

वेल्हग माह नरोत्तम विमलादेवीमाय ॥ सूरत मन मोहन इंदुनिरमलकाय ॥ १ ॥ श्रीवडतपगच्छपती पार्श्वचंद्रसूरि गुण धीर ॥ पीर चोवीस बोध्या मालवदेशके तीर ॥ २ ॥ इ-

हेस्वामी तुम्र विना भागो भगवरसायो असरणसरणं ॥ नमो० ॥ ५ ॥ वीरबावन चउमठ योगनियां रहे हाजर गुन गावे दुनियां सेवक पर टौलतमें मरणं ॥ ६ ॥ नमो ॥ जग परचा पूरण परचारी धारी महिमा तीन भुवनव्यापी बहु भूप- ति सेवे तुम चरणं ॥ नमो० ॥ ७ ॥ करे आरती सुर शि- रनामी दुःख दुश्मन दूर करो स्वामी मुनि अबीरचंद करे गुन वरणं ॥ नमो० ॥ ८ ॥ इति श्रीवडतपगण गगनदिनकर शृंगारहार श्रीपार्श्वचंद्रसूरीश्वराणां आरात्रिका संपूर्ण ॥

॥ अथश्री भैरवजीनी स्तवना ॥

रतनपुरी मंडण अति सोहे, भैरूजी महाराज; जीव वर्नावुन विकासन स्वामी, देख्यो रवि सम आज. मोरा स्वामी सेवक जन सुखकारी तुं छे कलियुग मांहे देव मोरा स्वामी सेवक जन सुख- कारी ॥ १ ॥ मुखें पान बहु सुंदर सोहे, गले सुरंग विशाल; धार हाथमें लंछन सोहे, कटिपामां घडपाल. मोरा स्वामी सेवक जन ॥ २ ॥ पाय मांहि घुघरिया घमके, मोहे पावडीयां मान; स्वानुवाहन अति सोहन मेरूजी, सुख थाय तत्काल मोरा स्वामी सेवक जन ॥ ३ ॥ घणा दिवसथी मारा मनमां, तुम दर्शननी आस; ते पुरी हवे स्वामी भक्त हुं, मल्ल करो अरदास मोरा स्वामी सेवक जन ॥ ४ ॥ ऋद्धि सिद्धि विद्या मुज आपो, कापो चिंता जाल; रतन मांहे मुनि सुख वधारो, निजनो बिरुद निहाल मोरा

व्याकरण तर्क भण्या अपार;
काव्य छंदनो लघाज पार.
जैन शैवना जगमांहि ग्रंथ.
पृग भण्या लाधो बहुलोजे अर्थ. ९
श्री पार्श्वचंद्र सूरीश्वर महुअज जाणे;
पंडित सघला जेहने वखाणे.
गय गना नवि जेहनी कार माने.
श्री पार्श्वचंद्र सूरि वंदनी वाने १०
योधपुरे जेणे [illegible] चमाथो.
[illegible] [illegible] यो
गयना [illegible] [illegible] हे वावे
गच्छना [illegible] [illegible] आवे. ११
[illegible] [illegible] [illegible] नाणी.
निवासी [illegible] [illegible] जाणी;
पंडित छंदनो जेणे [illegible] [illegible]. १२
फोर लोभ छंदनो [illegible] गर्व.

विमलादे नंदन भलो प्रागवंश शणगार. श्रीपास. १
लक्षण रुप कला घणी सोहग मयण अनुपा,
चंद्र गच्छे चडती कला,सोहम स्वामि सरुपा. श्रीपास. २
नयणे सारंग हराव्यो ए मुख पुनमका चंदा;
गतिजिति राज हंसकी तेजे जीत दिणंदा. श्रीपास. ३
पंडितराज सभा कथी, आगम अमृत गंगा,
नवरस धर्मकथा सदा, श्रावक श्राविका चंगा. श्रीपास. ४
किर्ति वहुली विस्तरे, महिमा मेरुसमान.
गुणसागर गुणदीपता, माने रायने राण. श्रीपास. ५
कवए पाट ए ते पढे, वादीनर कव जीता,
कवए ग्रंथजोडे लखे, ए गुरु जगत्र वदीता. श्रीपास. ६
समकित संजम सावेए, बावीस परिसह सहणा;
जिनशासन दीपावीओ,कीधी साच सद्दहणा. श्रीपास. ७
बोल इग्यार प्रगट कर्या, सूत्रतोधी बहुमर्म;
मिथ्यामत उथापिओ, साच्यो जिणवर धर्म. श्रीपास. ८
ठाम,ठाम आदर घणा, ठाम ठाम सनमान,

मरुधर गुज्जर मालवे, जीण दिसे पूज्यजी सिधावेरे;
निणदिस भवियण वृक्षवे. श्रीजिन आन मनावेरे. श्रीसूरि६
पूरव पुन्ये गुरु मल्या, मुनिवरमांहि महंतारे;
पंचमकाले पामीया, ते सेवक पुन्य वंतारे. श्रीसूरि. ७
श्री गुरुना गुण उजला, जे जन कंठे गावेरे;
ते नरनी चढती कला. दिन दिन दोलत पावेरे. श्रीसूरि. ८
सत्तर में पनरोतरे, मांडल गाम चउमासेरे;
श्रीजयचंद्र सूरींद्रना, श्री पद्मचंद्र सूरि भाषेरे. श्रीसूरि. ९

॥ श्री पार्श्वचंद्रसूरि गुरुजीनी सज्झाय ॥

सुमति जीणंद समरी करीरे, समरी श्रीगुरु नाम. गणराजारे.
गच्छपति गिरुओ गाइएरे लाल, धन्य घडी धन्य जाम. गण.
तुं हम सुखकारी मदारे लाल, श्री पार्श्वचंद्र सूरींद्र. गण.
भविक कमल प्रतिबोधवारे लाल, प्रगटयो परम दिणंद. गण. १
नयर हमीर सुहावनोरे लाल, अमरवनी अभिराम. गण.
वेलग शाह वसे तिहांरे लाल, विमला ललित नाम. गण. २
पुत्र पवित्र प्रसव्यो तिणेरे लाल, जीम प्राची दीसी सूर. गण.

सूरज किरणे सीझवे, अगनि पचाणो अन्न;
समझे अक्षर वासने, पहेरे वलि तरुयन्न. १४
केसर रुले घर ठवे. पहिरे वनन पन्नम्म;
पार्श्वचंद्र पायोरीयो, धरतेनी जीन धरम्म. १५
पार्श्वचंद्र मारी पूयी, आपनी धर्म आण;
उपदेशे जन आवता, देशपनी दीवान. १६
गढपति राजा मालदे, छत्रपतीआं छत्रछाय;
वडा महीपति वंदता, पार्श्वचंद्र दनो पाय. १७
गढपति मालदेव गति, वाचे आ वचन्न;
पार्श्वचंद्र रीखेश्वर मेटीए, मोही दहाडा धन्न. १८
वणराये जीम कल्पवृक्ष, जेम पर्वते मेर;
मान समुद्रे खीर मर, तेम रुले पासेर. १९
नदी आंमणि गंगानदी, शास्त्र मणि सिध्धंत;
मनीयां मणि सीता सती, तिम पाश्रिगे पुन्यवंत. २०
इमो संवच्छर आवीयो, इलि आयो आसाद;
कोरो श्रावण भाद्रवो, निलर रलके ताद. २१

उरगाल्यं पविओगमां. दुःखमां गंयो देह:
पर इरगागी जीवडा, म्हां किम आवे भेद. २०
चिर चउले चषि लोचने, नमीओ मान्य नरिंद:
पार्श्वचंद्र गाजीपते, आगव रंग छंद. २१
कीधो आगम चामय. जरिया जार जिणंद:
वारह पद ते थापिया. वंदन चंद मुणिंद. २२
अंबर कनि इंबर कीयो, चन्दीउ मोटो चयण:
वल्लिकि चढी एक वादली, गाज महेनी गयण. २३
वाटे वेल्लावो लीज. जग आयो जलधार:
भर भरीया नदी खल्लकीया. पाणी पडे अपार. २४
नदीयां पूरह मालीयां, रेणु भवी वणराय:
पुरि पुरि लोक पुराणीयो, वरसे इंद्र मनाय. २५
के मंदिर के मालीयां, के प्रसाद अनूप:
पानवहे कोरा दहे, मेह चव शृंग रूप. २६
उदपि नहि उद्धरीओ, के अंबर फाटे जाम;
राय पधारो रावटी, नही मेहरो काम. २७

गच्छधोरी गाजे शुहिर, विमलचंद्र वहिवार:
पट्टोधरण प्रगटीयो, जयचंद्र जगे आधार: २६
जे राजा परजाइजे, सहुको नामे शीप.
जयचंद्र आयो जोधपुर, पुगी मनहि जगीस. २७[१]

श्री पार्श्वचंद्रसूरीश्वरजीनी स्तुति.

वंच इयाने गजीमो. ए देशी.

श्री गुरु गच्छपति गुणनिलो. गुरुओ गुणह भंडारोजी:
वर तपगच्छ वर शिरतिलो, शासणनो शिणगारोजी. १
युग परधान जगे दीपतो, श्री पार्श्वचंद्र सुरींद्राजी;
नामे नवनिधि संपजे, चरण नमे नर वृंदोजी. युग० २
प्रागवंश प्रगट कर्यो, वेला शाह मल्हारोजी;
लघुवय संयम आदरी, सकल जीव सुखकारोजी. युग० ३
किरिया आदरे आकरी, उपदेशे जिनधर्मोजी;
सांभलि भवियण आदरे, पामे ते शिव शर्मोजी. युग० ४
सवालख मरुधर मालवे, मेदपाट मेवाडोजी;

१ आ दुहानी मत एकज होवाथी वनना मयत्ने सुधारेल छे.

वरसे घारह मानहारे, भींजे जनमन देह. सुगुरु. १७
नागोरी नपगच्छे भलोरे, साहुस्यन गुरशीष;
दिनदिन दीसे दीपतारे, जाणो विमसारीस. सुगुरु. १८
शागवंश कुले चंदलोरे, मल्ल वत्ता मेंरम;
गिरुओ ए गुरु आगलोरे, वेहागार गुनम. सुगुरु. १९.
म्यण अमूल्कि जागीरेरे, विमलादे उर ग्याग;
भविक जीव प्रतिबुझवेरे, बोले मधुरि वाग. सुगुरु. २०
एतन जीभे किम कहुंरे, गुणह नल्मभुं पार;
श्री समरचंद इम विनवेरे, आगो भवनो पार. सुगुरु. २१

*श्री पार्श्वचंद्र सूरि सझ्झाय. राग मारुणी.

हवे वीजोरे श्रीगुरुतत्त्व विचारियेरे,जीण विण न लहे माग
शाणीरे श्रीगुरु जेणे ओलख्यारे, तेहना जाग्या भाग. *१
श्री गुरुरे श्रीपार्श्वचंद्र सूरीसरुरे, अभिनव उदयो भाग;
वडतर गच्छेर नायक महेजे सुरतरु,करे जिनआंण प्रमांग.२

* 'श्रीगुरु तत्त्व विचारीयेरे' आ पदनो समावेश न थवाथी पूरी कराय नथी माटे ढाळ ढुंक आवी रीते बांधी छे.

बहुजीव उगार्या चउगइ दोष निवारी. ॥ १॥
वडतपगच्छ नायक पवमुं बहु गुणवंत,
जिणशासणमांहि वरते छे जयवंत;
श्रीपार्श्वचंद्रसूरीश्वर शुद्ध प्रकाशक सोय,
जीण दुसम आरे मार्गदाख्या बहु लोय. वड. २
ममताने माया छंडी कुमत निवारी,
दुकर व्रत लीधो बालपणे ब्रह्मचारी;
जीम शास्त्रे सुणीये वयर कुंमर वैरागी,
तिम ए गुरु दीठा परतख सुममति जागी. वड. ३
एक असंयम वरजे दुविध बंधन मविशाले,
दंड सयल नयगयी परहरे संयम पाले;
सोल कषाय् चउवरजे महाव्रत पंच् आराधे,
पट्काया राखे सुगतिनणा सुख साधे. वड. ४
भागवंश यसुसर वेला शाह मल्हार,
विमलादे जनम्या त्रिण भुवन शिणगार;
छ दरिशण केरो जाणे सयलो भेव,

शुक्लाशीहर शीतल दीसावे मवि मेव. वह. ९
गुरु पंकज गरिवा काममोग नवि लीण,
नवकल्पे विचरे परीसह वरत्नविहीण;
गयरांगी सेवे जेनेनिजहित जांण,
एहवा गुरु सेवो उलट हैडे आंग. वड. १०
पुण्यउदयज लाधी एहवा गुरुराय सेव,
देखाडीय जेणे धर्म सुगुरु सुद्ध देव;
चीरं मनयो मुझगुरु सपरिवार निशदीश,
मनरंगे पमणे श्रीसमरचंद्र निशदीश. वड. ११

श्री पार्श्वचंद्र सूरीश्वर सज्झाय.

अविचल वाचा पूज्यनीरे, मेरुतणी परे धीर;
उपशम रस आणे सदारे, सायर जेम गंभीर;
विवेकी पूज्य श्रीपार्श्वचंद्र सूरीन्द्र. १.
करजोडी वंदु सदारे, दीठडे आणंद पूर. विवेकी०
पातक नासे दूर. विवेकी० घर घर मंगलतूर. विवेकी०
पांमीए कूर कपूर. विवेकी० उल्लसे पूण्य
अंकुर. विवेकी० ए आंकणी. २.

साधुरतन गुरु जगेजश प्रगटयो, वडतप गच्छ शिणगार;
सुधा समाणी वाणी गुरुनी, निरमल गुणह भंडार. सूरि. ३
सकल शास्त्र तणा गुरु आगर, कुमति मतंगज सिंह;
शुद्ध सद्दहणाए गुरु दासे, अनोपम अकल अबीह. सूरि.४
गंभीरिम गुणे सायर सरिखा, मंदरगिरि जेम धीर;
पंचमकाले एगुरु गौतम, जीत्यो मनमथ वीर. सूरि.५
गुज्जर मरुधर माल्वदेशे, बोध्या भवि एके अनेक,
वादी मृगलां दीसे मृगपति दीठे मुछेक. सूरि.६
धर्म धुरंधर धोरी जगमें, दरिसणे दारिद्र दहीए;
वीरपटोधर तुमचा जे गुण, एके जीभ केम कहीये. सूरि.७
राय राणा सवि सेवासारे, पंडित प्रणमे पाय;
बीजो पुरुष कोण छे युगमें, जे तुम समवड थाय. सूरि.८
नयर जोधाणे सिधा सद्गुरु देवयया गुरुराज;
सुख संपत्त गुरुनामे लहीये, प्रणमे मुनि मेघराज. सूरि.९

॥ सुविहित सुगुरु गीत मिदं ॥

॥ शार्दूलविक्रीडितवृत्तं ॥

यो लेमे गुरुसाधुरत्नकृपया पारं श्रुतांभोनिधे-

कुर्वन् मालवगुर्जरत्रिमरुभूदर्भं विहारक्रमात् ॥
प्राप्तो योधपुरं पुरंदरपुरं विज्ञाय चायुः क्षयं,
कृत्वांतेनशनं समाधिमरणाद्यः स्वर्गतस्तं स्तुमः ॥ ५ ॥
ते धन्याः कृतपुण्यकाश्च खलु ते येर्लेभ्य ईदृग् गुरुः
र्हंसानंद हरो भवार्णवतरी गीतार्थ सार्थोत्तमः ॥
अस्माकं तु श्रुतोक्ति युक्ति लहरीलोलन्नदीयोवचः ॥
पाथावारवरो वियोगजनितां तापं प्रहर्तुं क्षमः ॥ ६ ॥

द्रुतविलम्बित.

सुगुरुगीतमिदं रचितं मया,
वसुयुगांकमृगांकितवत्सरे ॥ १९४८.
जगति यावदिहेंदुदिवाकरौ,
विजयतात् खलु तावदहर्निशं ॥ ७ ॥

मालिनी छंद.

पठत पठत संतः संततं भक्तिमंतो,
रविविरचितमेतत् पार्श्वचंद्रीयगीतं;
शिवयुवतिविवाहे मंगलाभं सुलाभं,
सुगुरुगुणनिबध्धं सेतिहासं सुवृत्तं. ॥ ८ ॥

श्रीपार्श्वचंद्रसूरिगुरु [illegible]
श्रीपार्श्वचंद्रसूरि [illegible]
गुरु वांदां गंजन मय [illegible]
गुरुदरसण देवीदिनचन्दि [illegible]
श्रीयोधनयर अणसण [illegible]
पगलां शुभ मंड मगनि [illegible]
नागोर नगीने शुभ [illegible]
पाउलांनित्तवंदेलाभवनां, [illegible]
श्रीविक्रम नयर शुभ [illegible]
सवि पाप निमरमर दूर [illegible]
गुरुना गुणगानां चित्त [illegible]
गुरु परनिज परता फल [illegible]
गुरु नामे आपद दूर [illegible]
रिद्धि अष्टमहासिद्ध [illegible]
गुरु समर्यां संकट दूर [illegible]
वयरी मदछंडी [illegible]

अशुभ मल विकल कल विकल काजे;
सुगुरु क्रम कमल स्नानें विराजे. ॥ ४ ॥

श्लोक-काव्यं.

विद्वे स्नपनं तपनोत्करभा, मरभासिनसत्क्रमणस्य गुरोः
वरवारिभि राद्रतस्त्वरितं, तरु पुष्पकलाप सुवामरसैः ॥५॥
ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने परमदेवाय श्री पार्श्वचंद्र
सूरीश्वर सद्गुरुभ्योः जलं समर्पयामि स्वाहा॥इतिजलपूजा.

२. अथ द्वितीया चंदनपूजा.

दुहा-कुंकुम चंदन वरचीयें, कस्तुरी घनसार,
सरस सुरभि द्रव्य मेल्दीये. कर्गीयें विच विस्तार. ॥१॥
ढाल-सद्गुरु चरचित कमल विंब विधि वारंवार;
केसर घोली भरीय कचोलि पूजो सार.
पूरण अनुभव प्रगटे आतम कुमति नशाय;
उपगारी गुरु सद्गुरु चरण नमुं चित्तलाय. ॥ १ ॥

ढाल.

मोटका पाप संताप कापे, परम आनंद कल्याण आपे;
सूरि पार्श्वचंद्र साधुरत्न पाटे, पूजीयें पूज्य गहगट्ट थाटे॥

सकल मनवंछित काज सारे,
जेह गुरु चरण नयणे निहारे. ॥ ३ ॥

वसंततिलका वृत्तं.

संपूरितै दशदिशो धवलामितैः
संमोदितालिगणगीतगुणैश्च पुष्पैः
यस्ते समर्च्चति पदं परमं लभंते,
श्री पार्श्वचंद्रगुरुपादविलासलीलं. ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने परमदेवाय श्रीपार्श्वचंद्रसूरीश्वर-
सद्गुरुभ्यः पुष्पं समर्पयामि स्वाहाः ॥ इति पुष्पपूजा ॥३॥

४ अथ चतुर्थी धूप पूजा.

दुहा—अगर तगर अंबर सुरभि, नंदन चंदन मोद;
श्रीपार्श्वचंद्र सूरींद्र गुरु, वासित परम प्रमोद. ॥ १ ॥

ढाल—ते गुरु चरण सुवासे वासित जेहना अंग,
गंध सुगंध सुचंग लहे नित देह अभंग;
पूरव करम प्रबल फल अशुभ उदय जो थाय,
ते पण दूर टले पार्श्वचंद्र सूरीन्द्र पसाय. ॥ २ ॥

ल्पणे ब्रह्मचारी महाव्रत धारीरे.
आगमने अनुसार संयम सुखकारीरे:
साहुरयण मुणी रयण प्रबोधन पामीरे.
शुद्ध प्ररूपक आत्मनणा पारगामीरे. पूजो. ६
मीतणो मध्य भाग विकानेर जाणुंरे,
नजीक पुरी नागोर शहेर वखाणुंरे:
वोध्या गोत्र अनेक मिथ्यामति छोडीरे.
जोधपुरविच नित्य नमे कर जोडीरे. पूजो. ७
जन्म धर्यो सदी पन्नर मंनीश मालेरे.
नव वरसनी मांय दीक्षा उजमालेरे:
पोडश अपर वार नयर जोधाणेरे.
पाम्या स्वर्गावास वदे कल्याणे रे. पूजो. ८

श्रीपार्श्वचंद्रसूरिकृत

सत्तरभेदीपूजा विधिगर्भित स्तुतिः ॥

(वस्तुः) रयण कंचण रयण कंचण कलश भिंगार,
रोदधि वर जल भरिय आरसहस चउसठी अनोपम,

चउथी चिंतामणी समी फेडे बहु भवबंध. ॥ ४ ॥
कमल परिमल कमल परिमल कुंद मंदार,
पारिजात जाति सुमन सहस्रपत्र शतपत्र सुंदर,
कोरंटक केतकी सुदल चउलवेली गुलाबचंपक,
जल थलजात सुवर्णतर मुग्गर मुकलित फुल्ल.
पंचमी पूजा परिकरिय पामीसुं सुद सुर तुल्ल, ॥ ५ ॥
विविध ग्रंथित विविध ग्रंथित हार सुविचार,
चारु चतुर नव सरसधर विमल भाविसुविजाति सुमनस,
माळापरिमल बहुमलित भ्रमरवृंद झंकार रव रसः
टोडर सार सुदामकरि छट्ठी पूजा नाम,
नयणे अमिरस पूरियां खणे खणे करिय प्रणाम ॥ ६ ॥
कुसुम वर्णक कुसुम वर्णक पीत शित नील,
मेचवर्ण तामरसमय पारिजाति दल फुल मरुवक,
विविध जाति श्रेणीसमर वर्ण पूज सामग्री मनोहर,
रचना रंग भरिय करिय पूज्या प्रभु वीतराग,
कुसुम छूट चूरण करिय प्रगट्यो शिवपुर माग ॥ ७ ॥
चारु चूरण चारु चूरण सुरभि उदार,

गंगा सिंधु महानदी तिर्थ कुंड द्रह अमियरस
भद्रसाल नंदन सुमन पंडक वापी वारि,
जन्म सनाथ अमर करे चउविह सुर परिवारि
विमल चंदन विमल चंदन घसिय घनसार,
केसर सार सुमेलवी भरिय रत्न कंचन कचो
अंग विलेपन विधि करिय द्रव्य गंध रस महि
पूजा द्वितीय प्रमोदभरी, निरखे नयण अलो
जिनमूरति अवलोकतां मुज मने हरख कलो
देवनिम्मिय देवनिम्मिय विमल दोइ वस्त्र,
अति उज्वल उद्योतमय सुगणगंध कासाय प
अखिल अव्यंग अमूल्यतर चंद्रकिरण सम विम
पाहरविय पवित्र चडे पूजा तृतीय जिणंद,
पेखी परमानंदसुं अनुमोदे सवि इंद
गंध सुरभि गंध सुरभि सखर कर्पूर,
आमोदित आकाशतल किरण वहुल निर्झणीय
अति उज्वल तनु जिनतणुं करिय सार संजात
चरण कमले अरिहंततणे पूजा सकल सुगंध,

चउथी चिंतामणी समी फेडे बहु भवबंध. ॥ ४ ॥
कमल परिमल कमल परिमल कुंद मंदार,
पारिजात जाति सुमन सहस्रपत्र शतपत्र सुंदर,
कोरंटक केतकी सुदल वउलवेली गुलावचंपक,
जल थलजात सुवर्णनर मुग्गर मुकलित फुल्ल.
पंचमी पूजा परिकरिय पामीसुं सुह सुर तुल. ॥ ५ ॥
विविध गुंफित विविध गुंफित हार सुविचार,
चारु चतुर नव सरसघर विमल माविसुविजाति सुमनस,
मालापरिमल बहुमलित भ्रमरवृंद झंकार रव रस:
टोडर सार सुदामकरि छट्ठी पूजा नाम,
नयणे अमिरस पूरियां खणे खणे करिय प्रणाम ॥ ६ ॥
कुसुम वर्णक कुसुम वर्णक पीत शित नील,
मेघवर्ण तामरसमय पारिजाति दल फुल मरुवक,
विविध जाति श्रेणीसभर वर्ण पूज सातमी मनोहर,
रचना रंग भरिय करिय पूज्या प्रभु वीतराग,
कुमत कूट चूरण करिय प्रगट्यो शिवपुर माग ॥ ७ ॥
चारु चूरण चारु चूरण सुरभि उदार,

नाथ निरंजन पावनीय पुण्यतणुं घर रम्य.
ऐसी पूजा इग्यारमी सफल हुओ मुझ जन्म. ॥ ११ ॥
फूल परिकर फूल परिकर करिय प्रभु पासे.
पंचवर्ण दल पुष्पमय पुष्परंग प्रासाद मंडिय.
मल्लियमल्लिमंदिरअतिविमलरणझणंतिदिशिविदिशिभमरय.
द्वादशमी पूजा करिय फुल्ल पगर उदार.
शम रस उज्ज्वल अवतरिओ दीने परतिख सार ॥ १२ ॥
शालि उज्ज्वल शालि उज्ज्वल आणिय अखंड.
दुव्वलिखंडिय बलिखंडिय मांहि सुरभि सुगंध सुवासीत
दर्पण भद्रासण भरिय वर्धमान श्रीवच्छ मच्छजुग.
कलश अने स्वस्तिक विपुल नंद्यावर्त्त निवास.
तेरमी मंगलरचना पूरे मननी आश ॥ १३ ॥
अगर उत्तम अगर उत्तम मांहि मृगमोद.
कुंदरुक तोरुक्कमय मघमघंत वर धूप दहित,
कंचनरयण सुदंडधर धूपधान वैडुर्य चित्तर,
यत्न करी उक्खेविउं भोग भली परिणाम,
चउदशमी पूजा निपुण तारे भव संसार ॥ १४ ॥

सात आठ पग ओसरी धरिय पाणि मग कमल्लिनिय दोय,
त्रिणिवार मस्तक धरीय, भूमीतल नीय जाणु.
चउरंगुल ऊंचे भणे नमुत्थुणं सुजनाण. ॥ १८ ॥
एह विधिवर एह विधिवर मन्तर गुण भेद.
पूजा परमेश्वरतणी करे देव नर नारि श्रावक.
समकितधारि भगति भरी वीतराग शासनप्रभावक.
स्वर्ग मर्त्य पाताल सुर श्रीजिनभवन मझार.
सकल भगति अनुमोदना पार्श्वचन्द्र हर्ष अपार. ॥१९॥

श्री पार्श्वचंद्रसूरीश्वरस्तुति.

(जगदीशकनी आगलेरे, दीपकनो उद्योत–ए राग.)
प्रणमी प्रहसमे प्रेमथीरे, श्री संखेश्वरराय:
गुणीजनना गुण गावतांरे, समकित शुद्धि थाय हो भविका:
वर्तमान श्रुतनो धणीरे.
युग प्रधान शिरोमणीरे, श्री पार्श्वचंद्र सूरींद्र:
वंदो भविजन भावथीरे भावाचार्य मुनींद्र हो भविका:
वर्तमान. ए आंकणी. १
नागपुरी तपागच्छे रे. जैनशासनशृंगार:

भीती भयंकर नहि मवळेश ल्यावे;
ईती उपद्रव दुकाळ ते दूर थावे,
निंदे करं नमन श्रीप्रभु नाथ आजे. ११.
छाया करे नद अशोक सदैव सारी.
वर्षो सुगंध शुभ शीतळ श्रेयकारी;
पवीत्र शीतळ करे नहि भारत्यागी.
श्रेयांस नाथ तुज सेवनथी समाधि. १२
स्वामी चतुर्विध करे जिनराज ध्यान
मारंगने हृदय गिर गुण गोवर्धन;
निर्मुक्त अमि सुख ते सर हर्ष ते
वीतराग पूज्य महत्ता शुभ स्वभावा छे. १३.
जे मालिराय शुभ भाव भजाय हसे
हरि करे कुसुमनी गुलनार हसे;
हे वासवो शुभ सुरासन भासतो छे,
छे एव हे जिनवर नाथ गुरु श्री छे. १४.
संसारनी सब मला चतुराइ त्यागे,
संपन्न थया भवमांहि हैतानकारं;
अहाय करेश हर शोक हरी भरेल,

शंखेश्वरा अमीझरा फलिकुंड मोहे;
श्री अश्वसेन कुलदीपक मातु वामा,
नित्ये अचिंत्य महिमा प्रभु पार्श्वनामा. २७.
सिद्धार्थ राय त्रिसला सुत नित्य वंदो,
आनंदकारक सदा चरणारविंदो;
जे शासनेश्वर तणो उपकार पामी,
पूजुं प्रभु चरण श्री महावीर स्वामी. २८.
श्वेतांबरी शुभ परंपर आद्य जेनी,
संवेग जैन रसरंगित आतम तेनी;
शास्त्रोक्त शुद्ध उपदेशक मुख्य सूरि,
श्री पार्श्वचन्द्र गुरुराज प्रताप भूरि. २९.
चंद्रार्ध शोभित विशाल कपालकांति,
श्री हर्षचंद्रसूरि राज स्वभाव शान्तिः
शिष्यो थया तस पदे सूरि हेमचन्द्रो.
छे जेष्ट भ्रात कुशलेंदु सुमुक्तिचन्द्रो. ३०.
पट्टे परंपर युगंधर उग्रभागी,
ऋषि परिग्रह महामद मोह त्यागी;
ते विद्यमान विचरे गुणवंत आजे,
श्री भ्रातृचंद्र गुण निर्मल सूरि राजे. ३१.
विख्यात श्री गुरु सदा हरचंद्र हेते,
तेना प्रताप सुपसायथी शान्ति चित्ते;
द्वात्रिंसिका स्तुति जिनेंद्र असंदकाव्ये,
श्रेयो वसन्त तिलका कृति शुद्ध भाव्ये. ३२.

ग्रन्थ संबंधी शुद्धिपत्र.

पृष्ठ.	अशुद्ध.	शुद्ध.	लिटि.
१	सद	सद्	२
१	काइय	काइय	९
३	जनम	जनम	१६
६	समा	मप्न	१९.

आ पुस्तक उपयोगवाला सज्जनभाइयो लइ शके ते हेतुथी आनी फक्त एक आनो कीमत टपाल खर्च जुदु ए प्रमाणे राखवामां आवेल छे अने जे उपज आवसे ते शुभकार्यमां खाते. वापरवामां आवसे. जेम बने तेम पुस्तकनी अशातना टालवी एवी वाचकवृंद प्रते नम्र विनंति छे.

ली. मं—ल.